• वर्ष ६५ • अंक ८ • मूल्य ₹२०

अप्रैल (द्वितीय) २०२३

पाक्षिक

परोपकारी

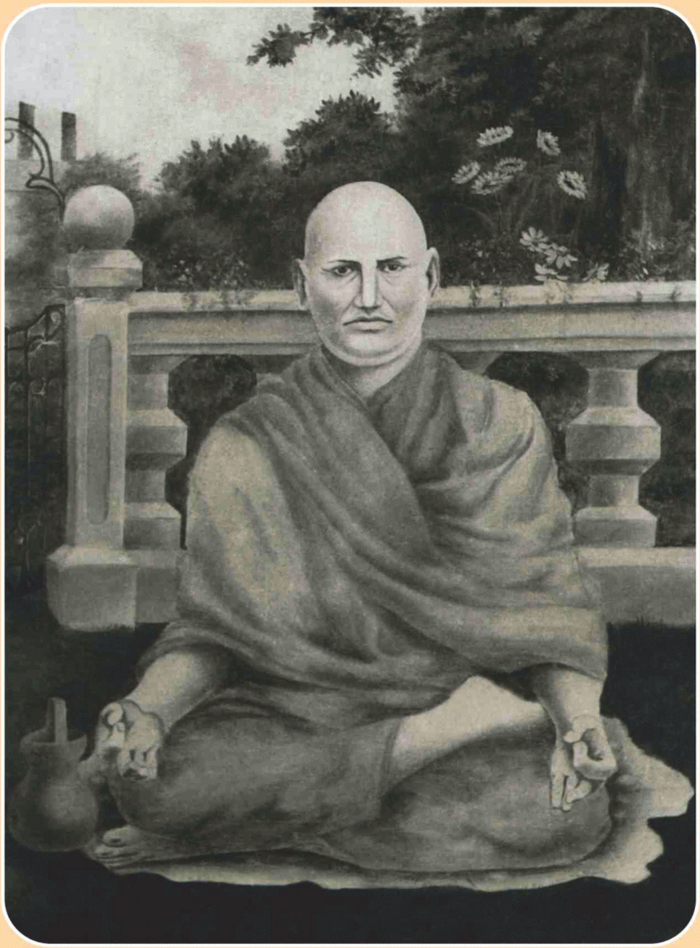

महर्षि दयानन्द सरस्वती

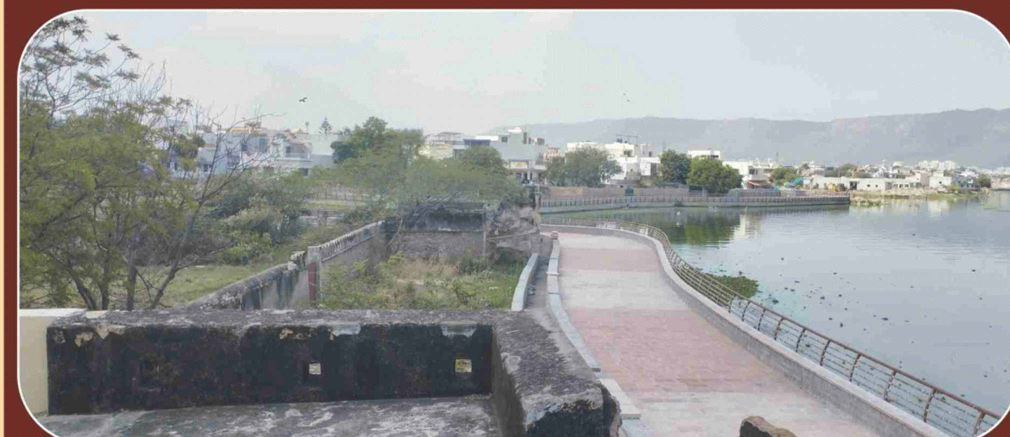

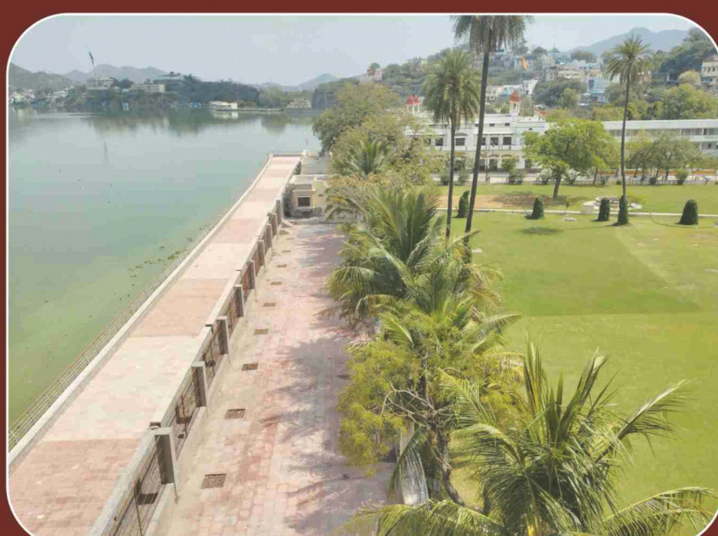

ऋषि उद्यान के पीछे नवनिर्मित पाथ वे के चित्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६५ **अंक :** ०८

दयानन्दाब्दः १९९

विक्रम संवत् - वैशाख कृष्ण २०८०

कलि संवत् - ५१२४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२४

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

मुद्रक-देवमुनि-भूदेव उपाध्याय
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अप्रैल-द्वितीय, २०२३

अनुक्रम

०१. समलैंगिकता : प्रकृति या विकृति	सम्पादकीय	०४
०२. आर्यसमाज का आग्नेय रूप	डॉ. रघुवीर वेदालंकार	०५
* परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम		०६
०३. अग्नि सूक्त-४२	डॉ. धर्मवीर	०७
०४. विरोध का सामना कैसे?	मुनि ऋतमा	१०
०५. वैदिक विभूति	श्री पं. हरिशंकर शर्मा	११
०६. वैदिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान का...	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	१२
०७. आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण	मुनि सत्यजित्	२०
०८. संस्था समाचार	श्री ज्ञानचन्द	२२
* सभा एवं पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ		२५
* योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर		२७
* आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर		२८
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		२९
०९. संस्था की ओर से....		३१
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३३
१०. पुस्तक-परिचय...	श्री देवमुनि	३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

समलैंगिकता : प्रकृति या विकृति

प्राणिमात्र के पास किसी कर्म में प्रवृत्ति या निवृत्ति करने का महत्त्वपूर्ण प्रेरक साधन 'मन' नामक सत्ता है। मनोवैज्ञानिक मन: संवेग का वर्णन करते हुए उसके साथ मूलप्रवृत्तियों का भी वर्णन करते हैं। यद्यपि यह प्रवृत्तियाँ तथा संवेग वैसे तो सभी प्राणियों में होते हैं, किन्तु इनकी पूर्ण एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति मनुष्यों में ही उपलब्ध होती है। पशु-पक्षी इन प्रवृत्तियों तथा संवेगों के होते हुए भी कहीं न कहीं स्वाभाविक रूप से अधिक सन्तुलित दिखाई देते हैं। 'काम' नामक मन: संवेग तथा कामप्रवृत्ति होते हुए भी पशु-पक्षी मनुष्य की अपेक्षा सन्तुलित व्यवहार करते दिखाई देते हैं।

सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने का दम्भ करने वाला मनुष्य संस्कृति तो दूर प्रकृति से भी हटकर विकृतिग्रस्त दिखाई देता है। प्रत्येक सभ्य समाज 'काम' नामक मन: संवेग को मर्यादित करने के लिए कुछ सीमाएँ या मर्यादाएँ निर्धारित करता है। 'विवाह' संस्था भी इसी कारण अस्तित्व में आई। संसार का कोई भी सभ्य समाज स्वच्छन्द यौन सम्बन्धों का समर्थक नहीं है। यहाँ तक कि आदिवासी/वनवासी समाज भी जिनमें शिक्षा या आधुनिक सभ्यता का प्रसार नहीं है, वह भी यौन स्वच्छन्दता को स्वीकार नहीं करते हैं। 'काम' नामक मन: संवेग के शमनार्थ स्त्री-पुरुष का मेल प्रकृति है। इसे व्यवस्थित एवं नियमबद्ध करना संस्कृति है, किन्तु केवल काम के शमनार्थ समलैंगिक सम्बन्ध स्थापन तो प्रकृति भी नहीं कही जा सकती। इसे तो केवल विकृति कहा जा सकता है। यह विकृत मानसिकता का द्योतक है।

पुराना धर्म नियम (Old Testament) में 'सोदोम' तथा 'अमोरा' के विनाश का वर्णन है। इन नगर के निवासियों में समलैंगिकता की विकृति आ गई थी। पाप की प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई थी कि लूत द्वारा अपने पास आए अतिथियों को इससे बचाने के लिए अपनी अविवाहित पुत्रियों तक का समर्पण का कथन किया था, किन्तु वे लोग बलात् उनसे अप्राकृतिक सम्बन्ध बनाने पर अड़े थे। इसी पाप के कारण 'सोदाम' तथा 'अमोरा' दोनों आकाश से गन्धक और आग की वर्षा होने से नष्ट हो गए।

अनेक वर्ष पूर्व कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों द्वारा इसका पुरजोर समर्थन किया गया। कानून की जिन धाराओं में इसे अपराध माना गया था, उन्हे परिवर्तित कर दिया गया और सहमति से सम्बन्ध बनाना अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया। यह कार्य विकृति को मान्यता देने वाला सिद्ध हुआ। यह सुस्पष्ट तथ्य है कि जब किसी कुरीति, कुप्रथा या अपराध को सहन किया जाता है, तो वह बढ़ता है। इस विषय में तो सहन करना ही नहीं, अपितु उसे वैधानिक ढाँचा पहनाने जैसा कार्य किया गया है।

अब समलैंगिकों के साथ रहने अथवा विवाह के पंजीकरण की माँग मनवाने के लिए न्यायालय तक का सहारा लिया जा रहा है। जिन न्यायालयों में इतने वाद लम्बित हैं कि पीड़ित को न्याय प्राप्त करने में पन्द्रह-बीस वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ती हो, वही न्यायालय इस प्रकार के आवेदनों पर प्राथमिकता से विचार के लिए समुद्यत हों, तब सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण की कोई सम्भावना कहाँ की जा सकती है।

स्वयं को घोषित रूप से इस कुप्रथा को माननेवाला कहने वाले, जब कहीं महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठ जाएँ और वह भी उस पद पर जिनसे दूसरों को इससे पीड़ित होकर कभी उनके पास न्याय के लिए जाना पड़े, तो क्या वहाँ पर न्याय प्राप्त हो सकेगा? इसमें सन्देह तो रहेगा ही।

अब इस प्रकार के सन्दर्भ भी समाचार-पत्रों में आ रहे हैं कि विकृत मानसिकता का व्यक्ति अपने बच्चों और पत्नी अथवा पति को छोड़कर अपने साथी के साथ रहते हुए कानून से सुरक्षा की भी माँग करने लगे हैं।

यदि इस प्रकार के व्यक्तियों के विवाह (इसे किसी भी सभ्यता या संस्कृति की सीमा में विवाह कहा ही नहीं जा सकता) को वैध मानकर पंजीकरण या मानवाधिकार के नाम पर सुरक्षा प्रदान की जाने लगी, तो आनेवाले समय में इस कुप्रथा को नियन्त्रित करना समाज तो दूर सरकार के लिए भी कोई सरल नहीं होगा। मानवता की रक्षा के लिए इसे जितना शीघ्र और बलपूर्वक हतोत्साहित किया जाएगा, उतनी ही मानवता की संरक्षा सम्भव हो सकती है।

डॉ. वेदपाल

आर्यसमाज स्थापना दिवस के लिए

आर्यसमाज का आग्नेय रूप

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आर्यसमाज का प्रारम्भिक रूप पूर्णत: आग्नेय था। इसी लिए आर्यसमाज द्रुतगति से देश-विदेश में फैला तथा विदेशी लेखकों ने इसे वही अग्नि कहा जो तेजी से ग्रामों-नगरों को पार करके जगलों-पर्वतों की ओर फैलती जा रही है तथा वहाँ के घास-फूंस-कटीले कबाड़ को भस्म कर रही है। सचमुच तब आर्यसमाज ऐसा ही था। वह पाखण्ड के पर्वत को दग्ध कर रहा था। अग्नि के कई गुण हैं, किन्तु उनमें दो प्रमुख हैं। अग्नि दाहक है तथा प्रकाशक है। दहन के साथ वह शीतातुरों के शीत को भी दूर करती है। उनके प्राणों की रक्षा करती है। शीतातुर व्यक्ति शीत से जकड़ कर मर जाता है। अग्नि प्राणदाता है।

आर्यसमाज रूपी अग्नि ने ये दोनों कार्य सफलतापूर्वक किये। उसने पाखण्ड के पर्वत को दग्ध किया तथा अछूत, विधवा, कन्याएं आदि को धर्म के नाम पर होने वाली जकड़न से बचा लिया। ये सभी इन दूषित प्रथाओं से जकड़े हुए थे। इसके साथ ही जन सामान्य को भी आर्यसमाज ने धर्म, कर्मठ तथा मोक्ष, ईश्वर आदि का शुद्ध स्वरूप बतला कर उनको ज्ञानप्रकाश पदान किया। ये सभी कार्य आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा ही प्रारम्भ किये गये थे।

अग्नि आहुति भी माँगती है। बिना आहुति अग्नि शान्त हो जाती है। महर्षि ने जिस अग्नि का आधात आर्यसमाज के रूप में किया था, उनके सुयोग्य शिष्यों ने उसमें अपनी आहुति देकर उसे प्रचण्ड रखा, बुझने नहीं दिया। इस अग्नि के संस्थापक ने अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की तथा कहा कि यदि मेरी अंगुलियों को दीपक में बत्ती बनाकर भी जलायेंगे, तो भी मैं राजस्थान जाने से नहीं रुकूंगा। वही हुआ भी। वे राजस्थान गये, प्रचार किया, राजगुरु भी बने, किन्तु वहीं इस आग्नेय ऋषि ने अपने आपको भी आहुति रूप में इस अग्नि को समर्पित कर दिया। ऋषि में वह शक्ति संसार के उत्पादक, प्रकाशक तथा संहारक परमेश्वाग्नि से आ रही थी। दयानन्द ने उसे अपने अन्दर समेटा तथा अन्तिम समय भी उसे ही स्मरण करते हुए उसमें समा गये। महर्षि के पश्चात् उसके शिष्यों में भी वही आग्नेय तत्त्व विद्यमान था। वह उन्हें अपने गुरु दयानन्द से स्वाभाविक रूप में उसी प्रकार प्राप्त हो गया था, जैसे पिता के गुण पुत्र को। परिणामस्वरूप महर्षि के पश्चात् प्रथम काल में भी वह अग्नि बढ़ती रही, चारों ओर फैलती रही। इसका क्या कारण था? यही कि दयानन्द के शिष्यों ने भी इस आर्यसमाजाग्नि में अपने आपको आहुति रूप में प्रस्तुत कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द सर्वस्व दान करके अपने गुरु की भाँति सर्वत्यागी सन्त बन गये। पं. लेखराम तो कहा ही करते थे कि मैं सिर हथेली पर लिए फिरता हूँ। सचमुच कितना साहस तथा गुरु भक्ति थी, इस दयानन्द के दीवाने में? इन्होंने भी अपनी आहुति आर्यसमाजाग्नि में दे दी। पं. गुरुदत्त तो अपना आपा ही भूल कर चलते-फिरते आर्यसमाज बन गये। महात्मा हंसराज का त्याग किसे स्मरण नहीं है। इस प्रकार उस समय के सभी विद्वानों, संन्यासियों, भजनोपदेशकों तथा कार्यकर्त्ताओं ने उस आग्नेय तत्त्व को प्रज्वलित रखा। मन्द नहीं होने दिया। हम उनके ऋण से कैसे उऋण हो सकते हैं?

वही अग्नि अभी भी जल रही है, किन्तु केवल यज्ञ कुण्डों में। हमारी हृदयस्थ अग्नि समाप्त हो गयी। इसीलिए आज यह यज्ञाग्नि न तो पाखण्ड को दग्ध कर रही है तथा न ही जनसामान्य को प्रकाश एवं प्रेरणा दे रही है। यज्ञ में इदन्न मम का भाव रहता है। हमारा सामाजिक

यज्ञ इदं मम से आक्रान्त हो गया। याज्ञिक भावना छूट गयी। त्याग के स्थान पर स्वार्थ आ गया। नि:स्वार्थ सेवा के स्थान पर पद लिप्सा आ गयी। गतिशीलता का स्थान शैथिल्य ने ले लिया। उत्साह को प्रमाद ले बैठा। हम लेकर लकीर पीटने लगे तथा आग्नेय स्वरूप समाप्त कर लिया। परिणाम तो वही होना था। आज आर्यसमाजाग्नि न तो पाखण्ड को, कुरीतियों को दग्ध कर रही है तथा न ही जनसामान्य के शीत का हरण कर रही है।

पुनरपि हम अपने आर्यसमाजों में तथा सम्मेलनों आदि में महर्षि दयानन्द तथा उनके दिवंगत अनुयायियों का जयघोष करते रहते हैं। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष वो करते हैं, किन्तु वर्त्तमान पर दृष्टिपात नहीं करते कि हमारे देखते-देखते ही हजारों की संख्या में व्यक्ति बौद्ध धर्म में दीक्षित हो रहे हैं। लव जिहाद के माध्यम से हमारी कितनी कन्याओं का जबरन धर्मपरिवर्तन किया जा रहा है तथा न मानने पर उनकी हत्या तक की जा रही है। ईसाई तो अपने तरीके से धर्मपरिवर्तन कर ही रहे हैं। क्या इन सबका प्रतिकार करना आर्यसमाज का कर्त्तव्य नहीं? क्या उद्घोष करना मात्र ही हमारा उद्देश्य बन गया?

आर्यसमाज राजनीति से दूर रहना चाहता है। हाँ, अपने ही अन्दर अवश्य राजनीति करता रहता है। कोई भी धर्म राज्य के आश्रय से ही आगे बढ़ा है, फला-फूला-फैला है। प्राचीन वैदिक धर्म, बौद्ध, जैन, मुस्लिम तथा ईसाई सभी की यही अवस्था है। आज माननीय प्रधानमन्त्री जी ने दो वर्षों तक चलने वाले महर्षि दयानन्द विषयक कार्यक्रमों में सहायता की घोषणा की, यह राज्याश्रय ही है। महर्षि दयानन्द ने इसे समझा था तथा इसके लिए ही राजार्य सभा का विधान किया था। हमने उसे तिलाञ्जलि ही दे दी।

इस प्रकार वर्तमान में न तो राजनीति में आर्यसमाज का वर्चस्व है। न ही वह वर्तमान सामाजिक उथल-पुथल पर अपना ध्यान दे रहा है। पाखण्ड एवं अन्धविश्वास तो आकाश वाले की तरह बड़ी तेजी से फैलता जा रहा है। हम अपने साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों तथा सम्मेलनों तक ही सीमित है। केवल भूत से चिपटे हैं, वर्त्तमान को नहीं देख रहे। भूत पर गर्व करना श्रेष्ठ है, किन्तु उसके आधार पर वर्त्तमान को भी संवारना चाहिए। भविष्य के लिए स्थायी दूरगामी योजना बनानी चाहिए, तभी हमारी अग्नि चमकेगी, दहकेगी, पाखण्ड का नाश तथा जनसामान्य के लिए प्रकाश प्रदान करेगी। इस अग्नि में संगठित होकर आहुति दें तभी कल्याण है। बिखराव तो विनाश का मार्ग है।

बी-२६६, सरस्वती नगर, दिल्ली-३४,
मोबाइल : ९८६८१४४३१७

परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम

०१.	आर्य वीर दल शिविर	-	१४ से २१ मई-२०२३
०२.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	११ से १८ जून-२०२३
०३.	आर्य वीरांगना दल शिविर	-	१९ से २५ जून-२०२३
०४.	दम्पती शिविर	-	२४ से २७ अगस्त-२०२३
०५.	डॉ. धर्मवीर स्मृति दिवस	-	०६ अक्टूबर-२०२३
०६.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	२९ अक्टूबर से ०५ नवम्बर-२०२३
०७.	ऋषि मेला	-	१७, १८, १९ नवम्बर-२०२३

कृपया शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविरार्थी पूर्व से ही प्रतिभाग की सूचना दें।

अग्नि सूक्त-४२

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।
-सम्पादक

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।

यह वेदज्ञान की चर्चा जो हम कर रहे हैं, इसमें अभी हमारा जो विषय है वो ऋग्वेद के पहले मण्डल के पहले सूक्त का सातवाँ मन्त्र है। इसका ऋषि मधुच्छन्दा है, देवता अग्नि है, छन्द गायत्री हे। इसमें उपासना कैसे की जानी चाहिए, इसकी चर्चा की गयी है।

मन्त्र में कहा गया है कि हे परमेश्वर! हम तेरे पास आते हैं- **त्वा उप एमसि।** हम तुझे प्राप्त करने के लिए आ रहे हैं और केवल एक दिन नहीं, **दिवे-दिवे** प्रतिदिन आते हैं, आना चाहते हैं। **दोषा वस्तः** प्रात:काल और सायंकाल भी आना चाहते हैं, दोनों समय परमेश्वर का स्मरण करना चाहते हैं। वह आना केवल आना नहीं है, बल्कि उसके साथ-साथ मुख्य बाते हैं - **धिया और नमो भरन्त।** हम बुद्धिपूर्वक आ रहे हैं। अज्ञानता से, अनजान होकर नहीं आ रहे हैं। हमें ज्ञात है कि हमें तुझसे मिलना चाहिए और तुझसे मिलने का हमें लाभ है। तो उस लाभ को जानते हुए आ रहे हैं। जब कोई व्यक्ति किसी से कोई लाभ प्राप्त करना चाहता है, कुछ किसी से लेना चाहता है तो उसे सहज होना पड़ता है, नम्र होना पड़ता है। इसलिए शास्त्र में कहा है, जब-जब हमें ज्ञान की इच्छा हो, उपासना के द्वारा कुछ प्राप्ति की कामना हो तो हमें सदा नम्र होकर के उससे याचना करनी चाहिए। नम्रता से उससे माँगना चाहिए। इसलिए यहाँ एक शब्द आया - **नमो भरन्तः** और यह एक बार के लिए नहीं आया, वह हमारे स्वभाव में होना चाहिए। इसे हम एक मनु की पंक्ति से समझ सकते हैं- मनुष्य को नमस्कार करनेवाला होना चाहिए और उसके होने के क्या लाभ हैं, यह बताते हुए दो श्लोक पढ़े हैं। दोनों ही अभिवादन, नमस्कार को बताने वाले हैं लेकिन जो स्वभावगत बात है उसके लिए उन्होंने कहा है- **अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। च वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो नलम्।** यह अभिवादन नमस्ते यदि व्यक्ति करता है तो इसको बहुत सारे लाभ प्राप्त होते हैं। सामान्य रूप से भी किसी अनजान व्यक्ति के पास भी हम जाते हैं और उससे लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो उसको पहले हम अभिवादन करते हैं, उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके बाद हम अपना प्रयोजन बताते हैं। वैसे ही जब कोई कभी हमें मिलता है और हमारा परिचित नहीं है उससे मिलना है, तो भले ही प्रतिदिन नमस्ते न करते हो उस दिन कर लेंगे और आगे जब-जब भी मिलेगा, तब-तब भी करेंगे यहाँ कहा है कि आवश्यकता पड़ने पर अभिवादन सभी करते हैं, तो उसके लिए आपको अपने अभिवादन में एक विशेषता जोड़नी पड़ेगी- वो नमो भरन्तः कह दो या अभिवादन शीलस्य कह दो। अर्थात् नमस्कार करना जिसका स्वभाव है या जो नमस्कार करता हुआ उपासना करता है, दोनों ही परिस्थितियों में हमारा जो अभिवादन है, हमारी जो

प्रार्थना है वो एक परिस्थितियों में हमारा जो अभिवादन है, हमारी जो प्रार्थना है वो एक विशेष घटना या अवसर से जुड़ा हुआ नहीं है। वो हमारे स्वभाव से जुड़ा हुआ है हमारे शील से जुड़ा हुआ है। इसलिए मनु महाराज ने कहा है कि अभिवादन करना जिसका स्वभाव है, ऐसे व्यक्ति की बात की जा रही है और ऐसे व्यक्ति को क्या लाभ होता है? तो मनु महाराज कहते हैं कि जो अपने से ज्ञानवान्, बड़े लोगों, अनुभवी वृद्ध हैं, उनके पास उठता-बैठता है, उनकी संगति करता है, ऐसे व्यक्ति के आयु, विद्या, यश और बल सहज ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं। उसकी आयु भी बढ़ती है, विद्या भी बढ़ती है और उसके प्रशंसा के कारण यश भी बढ़ता है और उसका सामर्थ्य भी बढ़ता है अर्थात् हम सब उपासना करते हैं तो हमारे अन्दर नम्रता का भाव स्वाभाविक रूप से आता है, आना चाहिए। इसी प्रसंग में मनु ने एक बात और लिखी, इसके ऊपर के श्लोक में- **ऊर्ध्वम् प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यून स्थविर आयति। प्रत्युत्थाना अभिवादाभ्याम् पुनस्तान् प्रति पद्यते।** अर्थात् मनुष्य जब अपने पास किसी बड़े व्यक्ति को, बुजुर्ग को अकस्मात् अनायास अपने पास पाता है तो वह इस बात के लिए तैयार नहीं होता, उसकी मनःस्थिति इस तरह की नहीं होती, तो ऐसी स्थिति में उसके मन में एक उद्वेग आता है, अन्दर एक उथल-पुथल होती है, प्राणों का उत्क्रमण होने लगता है घबराहट में, संभ्रम में, इस परिस्थिति में क्या करें। तो मनु महाराज कहते हैं कि **'प्रत्युथाना अभिवादाभ्याम्'** यदि आप असहज है, तो हमारे प्राणों को स्वस्थ करने के लिए जो काम आवश्यक है, वह है प्रत्युथान और अभिवादन। अर्थात् उठकर अभिवादन के द्वारा। नमस्कार करने से हम सहज हो जाते हैं और अगला भी हमारे लिए सहज हो जाता है। तो यह जो मनोवैज्ञानिक प्रभाव है, एक छोटी सी क्रिया से हमें प्राप्त होता है और यह संसार के सामान्य मनुष्य के साथ किए गए व्यवहार में भी प्राप्त होता है। नमस्कार से हम व्यक्ति को वस्तु के रूपमें तो कुछ भी नहीं दे रहे होते हैं। लेकिन हम उसे सबसे बड़ी चीज देते हैं- आदर, सम्मान। वह उस आदर को पाकर गद्‌गद् हो जाता है, प्रसन्न हो जाता है। परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता का नम्रता का भाव प्रकट करते हैं तो वह परमेश्वर अनुकूलता का भाव निश्चित रखेगा। क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, कर्म का फल होता है। क्रिया की प्रतिक्रिया से हमें लगता है कि परमेश्वर कभी क्रोध भी करता होगा। कभी प्रसन्न भी होता होगा। उसको न गुस्सा करने की आवश्यकता होती है, न प्रसन्न होने की आवश्यकता होती है। वो तो आप जैसी क्रिया करोगे वैसी प्रतिक्रिया सहज प्रकृति के नियमों से होगी। कोई भी व्यक्ति यदि अनुकूलता का व्यवहार करता है तो उसे अनुकूलता से उत्तर मिलता है। इसलिए यदि हम यह सोचें कि परमेश्वर की प्रार्थना-उपासना में नमस्कार करने से क्या होता है- तो वहाँ कुछ नहीं होता है। शीशे में जैसे शीशा कुछ नहीं करता है, लेकिन आप हँसते हैं तो आपका चेहरा हँसता हुआ दिखता है। रोते हैं तो आपका चेहरा रोता हुआ दिखता है। क्रोध में है तो क्रोध में दिखाई देते हैं, वैसे ही परमेश्वर के साथ हम जिस रूप में प्रस्तुत होते हैं, जिस कर्म को करते हुए प्रस्तुत होते हैं, उसके परिणाम को हम वैसे ही पायेंगे। अतः हम यदि सोचें कि हम बिना नम्रता के परमेश्वर के पास जायेंगे, तो परमेश्वर तो आपके पास सदा ही है, बिना नम्रता के भी आपके पास ही रहेगा, आपके अनुकूल, आपके हित की ही बात करेगा किन्तु यदि आप उस हित को नकार देंगे, तो परमेश्वर क्या कर सकता है। वह तो आपने किया हे, उसका फल आपको ही मिलना है। यदि मैं किसी से सज्जनता का व्यवहार करता हूँ तो निश्चित रूप से मुझे वहाँ से अनुकूलता का व्यवहार प्राप्त होता है। मैं किसी के साथ प्रतिकूलता का व्यवहार करता हूँ, तो उसकी प्रतिध्वनि वैसी ही आयेगी। इसलिए कहा गया कि मैं परमेश्वर के प्रति नम्रता का व्यवहार करूँ, इसलिए नहीं कि परमेश्वर मेरी नम्रता से मुझे कुछ अधिक देनेवाला है,

किन्तु जो अनम्रता से माँगनेवाला है और जो नम्रता से माँगनेवाला है, उनमें जो स्वाभाविक अन्तर होगा, जो कर्म होगा उसका फल तो उसे मिलेगा।

इसलिए परमेश्वर की उपासना नम्रतापूर्वक होनी चाहिए। अतः यहाँ शब्द पढ़ा है नमो भरन्तः। हम उपासना करें, हम बुद्धिपूर्वक उपासना करें, नम्रतापूर्वक हैं। उससे हमें जो लाभ होता है, जो प्राप्ति होती है वो बिना नम्रता के नहीं होती है। जब हम अकस्मात् किसी से भेंट करते हैं तो हमारे अन्दर जो विचलन होता है उस विसंगति को सहज बनाने के लिए हम उठ खड़े होते हैं और सामने अभिवादन की मुद्रा में उपस्थित होते हैं तो हमारा प्राण यथा स्थान बैठ जाता है, स्थिर हो जाता है और दूसरे के मन में जो उसके अन्दर कोई सन्देह, संशय होगा, यह अनुकूलता में बदल जाएगी। इसलिए मन्त्र कह रहा है कि हे परमेश्वर हम तेरी उपासना ज्ञानपूर्वक करते हैं और तेरी उपासना में न्रमतापूर्वक प्रस्तुत होते हैं। यह उपासना अंग है और अनिवार्य है, क्योंकि जिस-जिस उपासना में नम्रता नहीं होगी वह उपासना नहीं बन पाएगी, वह या तो आदेश-निर्देश होगा, सूचना होगी, वह आदर या भक्ति नहीं होगी।

तो इस नम्रता की जो इच्छा, आकांक्षा है वो उपासना का भाग है। जब सांसारिक पदार्थों को हम नम्रता से प्राप्त कर सकते हैं- इसके लिए गीता में एक बड़ी सुन्दर पंक्ति लिखी है- जो लोग ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें क्या करना चाहिए। तो ज्ञान प्राप्ति के उपाय के रूप में वहाँ एक पंक्ति लिखी है-

तत् विद्धि प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन सेवया
उपदेक्ष्यन्ति तेज्ञानं, ज्ञानिन स्तत्त्वदर्शिनः।

जो तत्त्वदर्शी ज्ञानी लोग हैं वो अपना ज्ञान दूसरों को देते हैं। लेकिन उसे लेने का प्रकार है- प्रणिपातेन, जो व्यक्ति प्रणिणात करता है, नमस्कार करता है उसको ज्ञान की प्राप्ति होती है। कोई भी व्यक्ति उसे अपने पास हुई वस्तु देने में संकोच नहीं करता। परिप्रश्नेन- संवाद के द्वारा, प्रश्नोत्तर के द्वारा सेवया और सेवा के द्वारा।

तो हम परमेश्वर की भक्ति करते हैं, पूजा करते हैं, सेवा करते हैं, उन सबमें हमारे नम्रता का भाव परिलक्षित होता है और उस नम्रतापूर्वक हम जो काम करते हैं उससे हमें प्रसन्नता भी होती है और सफलता भी मिलती है। उसे करके पश्चाताप नहीं होता है। जो काम बिना नम्रता के किया जाए, उसका परिणाम दुःख, शोक और हानि है। इसके विपरीत, नम्रता से, सज्जनता से, उदारता से यदि कोई काम किया जाता है उसका लाभ अनुकूलता के रूप में, प्राप्ति के रूप में, सहृदयता के रूप में प्राप्त होता है। इसलिए यहाँ मुख्य शब्द पढ़ा है, **नमो भरन्तः।**

मुक्त पुरुषों को 'युगपत्' ज्ञान होता है

जिसे 'धनञ्जय' वायु का ज्ञान हुआ है और जिसकी आत्मा उसमें सञ्चार कर सकती है और जिनके आत्मा से पूर्वजन्म संस्कार निकल चुके हैं वह और जिसके आत्मा में स्थायी शान्ति उत्पन्न हुई है, जिसके आत्मा को अत्यन्त पवित्रता, स्थिरता, ज्ञानोन्नति की पहचान हो चुकी है और जिसकी दृष्टि को और मनोवृत्ति को ज्ञान सुख के बिना अन्य सुख विदित नहीं हैं, ऐसे योगी को परमानन्द प्राप्त होता है। ऐसे मुक्त पुरुषों को देश, काल, वस्तु परिच्छेद का 'युगपत्' ज्ञान होता है, उन्हें 'युगपत्' ज्ञान का अटक नहीं है। जैसे एक कण शक्कर चींटी को मिले तो वह उसे ले जाना चाहती है; परन्तु उसे एक शक्कर का गोला मिल जाये तो उसी शक्कर के गोले को वही पर चाट लिपट जाती है; इसी तरह योगियों की आत्मा की स्थिति परमानन्द प्राप्त होने पर होती है।

-स्वामी दयानन्द सरस्वती (पूना प्रवचन)

विरोध का सामना कैसे?

- मुनि ऋतमा

जीवन के संघर्ष आत्मा को शक्तिशाली बनाते हैं, लेकिन यदि जीवनभर स्थितियाँ संघर्ष, तनाव की ही बनी रहें तो...? एक अच्छा नाविक बनने के लिये समुद्री तूफान अच्छा शिक्षण स्थल है, लेकिन सदा ही तूफान बना रहे तो क्या उससे नाविक हतोत्साहित नहीं हो जायेगा? कृष्ण का आजीवन विरोध हुआ, यहाँ तक कि जन्म से पहले ही विरोध प्रारम्भ हो गया था। नि:सन्देह एक विरोध ने कृष्ण को कृष्ण बना दिया। लेकिन यदि अन्त तक संघर्ष विरोध की स्थितियाँ नहीं बनी रहतीं तो क्या कृष्ण कुछ कम कृष्ण रह जाते? या कहें निरन्तर विरोधों, युद्धों, तकरारों में उलझे रहने के कारण कृष्ण को वह शान्त, निर्विरोध चिन्तन वाला समय कम मिल पाया, जिसे वे अन्य रचनात्मक कार्यों में लगाते। वस्तुत: विरोधी शक्तियों पर विजय पाना कहीं जय-जयकार, तो कहीं घृणा का आधार बनता है, पर जीवन का आधार तब तक नहीं बनता जब तक वह विजयी शक्ति किसी रचनात्मकता में, सृजन में, सकारात्मकता में न लगे।

राम ने भी अनेक स्थानों पर एक स्पष्ट नीति के अन्तर्गत कार्य किया। न्यूनतम प्रतिरोध की नीति। उनकी इस नीति का आदर्श ये है कि विरोध करने वाली शक्तियों का कम से कम प्रतिरोध करके उनकी शक्ति का क्षरण कर दो। इससे अपनी शक्ति का क्षरण बचेगा। इसका अन्तिम परिणाम विजय ही होगा।

विरोध में बड़ी शक्तियों की संख्या बढ़ने का कारण क्या है? इसका कारण ये भी है कि जब आप विरोधी शक्ति के सामने डटकर खड़े हो जाते हैं, अर्थात् विरोध का मुकाबला जब सीधे-सीधे विरोध से करने लगते हैं, तो ऐसा करके आप अपने लिये विरोधों की शृंखला तैयार कर लेते हैं। राम ने इसके लिये नीति अपनायी। राज्यभिषेक का विरोध हुआ तो राम ने विरोधी शक्ति के केन्द्र 'राज्य' को ही छोड़ देने का निर्णय किया और वह भी तत्काल। तो जब आधार ही खत्म हो गया विरोध का, तो विरोध को तो खत्म होना ही था। ये परिस्थिति से डर कर छोड़ भागना या घबराकर पीछे हट जाना नहीं था। वो शक्तिशाली थे, लोकप्रिय थे, चाहते तो दृढ़ता से अड़े रहकर राज्याभिषेक करा सकते थे, लेकिन राज्य छोड़ देने का निर्णय नीतिगत था, यदि वो ऐसा नहीं करते तो नित नये संघर्ष, विरोध षड्यन्त्र व वक्तव्य सामने आने लगते और उनकी सकारात्मक करने की ऊर्जा का क्षरण बस उन्हीं के समाधान व सुलझाने में हो जाता, वे इनमें उलझकर रह जाते। क्या आप सोचते हैं ऐसा नहीं होता? राम ने विरोध की शक्ति को अपनी नीति से न्यूनतम कर दिया। स्वीकार्यता की नीति। वस्तु स्थिति को स्वीकार कर लिया जाय, जब वो विशेषकर स्वयं अपने बारे में हो। इसमें कहीं न कहीं अपना बचाव न करने की भावना जुड़ी हुई है। वे अपने बचाव में अपने पक्ष में कुछ नहीं कहते। इससे उन्हें कोई मतलब नहीं है कि आप उनके बारे में क्या सोचते हैं, क्यों कहते हैं। वे स्वयं में प्रसन्न हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि व्यक्ति अपने बचाव में ढेर सारी ऊर्जा यूँ ही नष्ट कर देता है। ऐसी जगह अपना बचाव, जहाँ से बचकर भी आगे फिर षड्यन्त्रों में घिरना ही है। अपनी ऊर्जा का व्यय अपने बचाव में कहाँ करना है और कहाँ नहीं, ये जानना भी बड़ा गुण है। अपने बचाव में लगने का दूसरा अर्थ ये भी होता है कि मुझे आपकी बात का बुरा लगा है, अपमानित महसूस हुआ है। ये महर्षि देव दयानन्द के जीवन की घटनाओं में भी देखने में आता है। लेकिन यदि समाज के प्रति अन्याय लगता हो, असत्य लगता हो। समाज के

लिये, देश के लिये असत्य प्रचार हो तो प्रत्युत्तर करना ही होता है। तब अपने बचाव में श्रीराम भी परशुराम के समक्ष उतरे हैं पर क्रोध व अपमान के भाव से नहीं, बल्कि सत्य को सामने लाने के भाव से, क्योंकि अनेक बार मौन को स्वीकृति समझकर असत्य प्रचार को लोग सत्य मान लेते हैं, ऐसे में मौन भी असत्य हो जाता है। जैसे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की घटना से हमें देखने को मिलता है, जब मौन का संकल्प लिये कुटिया के भीतर महर्षि बैठे थे और कुटिया में बाहर दो शिष्यों का वार्तालाप उनके कानों में पड़ा, जिसमें एक असत्य प्रचार कर रहा था, तब मौन संकल्प को तोड़कर भी बाहर निकलकर उन्होंने असत्य प्रचार करनेवालों को सत्य समझाया और कहा असत्य को यदि प्रचारित होने दिया जाय तो मौन भी असत्य का साथ देता है। लेकिन वनवास दिया जाना राम के लिये असत्य प्रचार या अन्याय नहीं था बल्कि पिता के द्वारा दिये वचन का पालन करना उनकी दृष्टि से न्यायसंगत ही था, इसलिये राज्य को पाने के लिये अपने बचाव में उतरकर वो अपनी ऊर्जा का क्षरण नहीं कर रहे हैं, बल्कि मौन रहकर चेता रहे हैं, मुझे तुम्हारी कोई परवाह नहीं है। तुम्हारे जो मन में आये करते रहो। वो अपने आपको आलोचना प्रत्यालोचना से बचाते हैं।

कौन व्यक्ति ऐसा कदम उठा सकता है जैसा श्रीराम ने उठाया? निश्चित रूप से वही जो अपने आप में विशुद्ध होगा। जो इतना दृढ़, ठोस होगा कि उससे टकराकर आलोचनाओं के तीर टूटकर बिखर जाये। तो जो लोग स्वीकार्यता की स्थिति को दब्बूपन का प्रमाण मानते हैं उन्हें अपने मत पर एक बार फिर विचार करना होगा।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़,
सागपुर, साबरकांठा (गुजरात)

वैदिक विभूति

कविवर श्री पं. हरिशंकर शर्मा

है वैदिकता का गौरव परम पुरातन,
वैदिक शिक्षा अति पुण्यमयी-अति पावन।
ऋषि-मुनि वेदामृत-पान किया करते थे,
वेदों पर प्यारे प्राण दिया करते थे।
उस दिव्य ज्योति का ज्ञान-उजाला करिए-
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए।
वर वेद पूज्य कल्याण त्राण-दाता हैं,
सदा ज्ञान-भानु प्रेरक पथ-निर्माता हैं,
जब तक वेदों की ज्योति जगी जीवन में
शुचिता-समता थ, ममता रही न मन में।
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए।
जो युक्ति, तर्क, दर्शन से शुद्ध हुआ है,
वैदिक का बल पाय प्रबुद्ध हुआ है,
जो नित्य सत्य सिद्धान्त रूप में भाया,
ज्ञानी -गुणियों ने धर्म्म-रूप अपनाया,
उसको जीवन में धार विनम्र विचरिए-
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए।
जो तत्त्व अभ्युदय निः श्रेयस् साधक है,
जो व्यष्टि-समष्टि परम प्रभु आराधक है,
जिसने 'मानव-मंगल' की ज्योति जगाई,
जो प्राणीमात्र के लिये परम सुखदाई,
वह श्रेयस्कर है, सदा उसे अनुसरिए,
वेदों की विमल विभूति विश्व में भरिए।

धर्म्म- जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात-रहित न्याय, सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये यही एक धर्म्म मानना योग्य है, उसको '**धर्म**' कहते हैं।

- आर्योद्देश्यरत्नमाला - २

वैदिक मनोविज्ञान
मनोविज्ञान का स्वरूप

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

टिप्पणी : स्मृतिशेष डॉ. द्विवेदी आर्यजगत् के यशस्वी विद्वान् थे। आपने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। लेख की उपयोगिता के कारण इसे साभार पुनः प्रकाशित किया जा रहा है- सम्पादक।

वर्तमान समय में मनोविज्ञान एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विज्ञान है। इसे मनोविज्ञान या Psycology कहा जाता है। Psycology शब्द Psycho (ग्रीक Psyche spirit, Mind, आत्मा, मन) और Logy (ग्रीक Logia, विज्ञान) शब्दों के मेल से बना है। इसका अर्थ है। मन का विज्ञान या मन की विभिन्न स्थितियों का विज्ञान। मन के समस्त क्रियाकलाप का वैज्ञानिक अध्ययन इसका विषय है। मनोविज्ञान का सम्बन्ध दर्शन और विज्ञान दोनों से हैं। मन और मन की विविध चेष्टाएं दर्शन का विषय है; अत: यह दर्शन है। मन के विविध क्रियाकलापों का यत्रों के द्वारा सूक्ष्मतम निरीक्षण और उनका परीक्षण, उन परीक्षणों से विविध निष्कर्ष निकालना आदि विज्ञान का विषय है, अत: मनोविज्ञान दर्शन और विज्ञान दोनों से सम्बद्ध है।

मनोविज्ञान के अन्तर्गत संक्षेप में ये विषय लिये जाते हैं- स्नायु-मण्डल (Norvous System), संवेदन (Sen- sation), प्रत्यक्षीकरण (Percep- tion), अवधान या ध्यान (Attention), सीखना (Learning) स्मरण (Remembering), विस्मरण, (Forgetting), कल्पना (imagina- tion), चिन्तन (Thinking) भाव या अनुभूति (Feeling) संवेग (Emotion) प्रेरणा (Moti- vation), चेतना (Consciousness), स्वप्न (Dream), बुद्धि (Intelligence), योग्यताएं (Aptitude), व्यक्तित्व (Personality), वंशानुक्रम एवं वातावरण (Heredity and Enviromn- ent), विफलता (Frustraion) आदि।

आधुनिक मनोविज्ञान में ज्ञान और विज्ञान के विविध क्षेत्रों को लेकर इसकी अनेक शाखाएं हो गई हैं। जैसे- बाल मनोविज्ञान, शिक्षा-मनोविज्ञान, समाज-मनोविज्ञान, उद्योग मनोविज्ञान, न्याय या विधि-मनोविज्ञान, वाणिज्य-मनोविज्ञान, अपराध-मनोविज्ञान, परा मनोविज्ञान, स्नायु-मनोविज्ञान (Neuro-Psycology)

भारतीय चिन्तन को धारा

वेदों मनोविज्ञान की जो रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, उसका कुछ विकसित रूप ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में प्राप्त होता है। जिस प्रकार वर्तमान समय में मनोविज्ञान का विश्लेषणात्मक अध्ययन हो रहा है, उतना विस्तृत और व्यापक अध्ययन प्राचीन समय में प्राप्त नहीं होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में मन का शास्त्रीय रूप प्रस्तुत किया गया है। इनमें मन के गुण, धर्म, स्वरूप और कार्यों की समीक्षा है। इनका ही यहाँ पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया किया जा रहा है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में मन को ब्रह्म कहा है।[१] यह सर्वशक्तिमान् है और परमात्मा का स्वरूप है, अत: ब्रह्म है। मन सृष्टि का कर्त्ता है, अत: उसे ब्रह्मा कहा गया है।[२] इसी कर्तृत्व के आधार पर उसे प्रजापति या सृष्टि-निर्माता बताया है।[३] मन की कल्पना से ही यह सारा संसार है। मन जैसा चाहता है, वैसा होता है। अत: उसे सर्वम् (सब कुछ) कहा है।[४] मन की शक्ति अनन्त है, अत: उसे अनन्त और अपरिमित कहा गया है।[५] मन की दिव्य शक्तियों के कारण उसे देव बताया गया है।[६] मन में प्रेरणा शक्ति है, अत: उसे अग्नि कहा गया है।[७] मन

कल्पनाओं और शक्तियों का अथाह भण्डार है, अत: उसे समुद्र बताया गया है[८], मन विचारों का भण्डार है, महानदी है और उसका प्रकाशन वाणी के द्वारा होता है अत: वाणी को मन की नहर कहा है।[९]

मन प्रजापति या ब्रह्म का विशिष्ट शरीर है।[१०] मन का ही काम है कि यह नाना प्रकार की सृष्टि रचना करता है। मन और वाणी का असाधारण सम्बन्ध है। जो मन सोचता है; वाणी उसे प्रकट करती है।[११] मन में ही आत्मा (=चेतना की प्रतिष्ठा है, अर्थात् मन ही आत्मा के सब काम करता है।[१२] मन प्राणों का अधिपति है। मन जिस प्रकार प्राणों को आदेश देता है, उसी प्रकार प्राण है।[१३] इसका अभिप्राय यह है कि मन के आदेशानुसार स्नायु मण्डल एवं रक्तप्रवाह का संचालन होता है। समस्त प्रत्यक्षीकरण का काम मन करता है, मन ही देखता है और मन ही सुनता है।[१४]

शतपथ ब्राह्मण में बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही गयी है कि ये सभी तत्त्व मन के ही विभिन्न रूप है- काम (इच्छा), संकल्प (विचार) चिकित्सा (उहापोह, सन्देह), श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति (धैर्य), अधृति (अधीरता), ह्री (लज्जा) धी (ज्ञान), भी (भय, डर, आतंक)।[१५]

इसी प्रकार उपनिषदों में मन के विविध गुण-धर्मों का वर्णन किया गया है। मन महान् शक्ति है; उसका सब पर अधिकार है, वह परमेश्वर रूप है, अत: उसे सम्राट् और परब्रह्म कहा गया है।[१६] मन प्रकाशक और ज्योतिरूप है। वही ज्ञान का दाता है, अत: उसे ज्योति कहा गया है।[१७]

मन चेतना रूप (Consciousness) है। मानव का निर्माण चेतना करती है।

जैसी मन की प्रवृत्ति होती है, वैसा ही मनुष्य का स्वभाव और व्यक्तित्व विकसित होता है। अत: उपनिषद् का कथन है कि मनुष्य मनोमय है।[१८] मनुष्य के मन का अध्ययन उसके व्यक्तित्व का अध्ययन है। उसकी इच्छाएँ, उनके संकल्प, उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। अत: उपनिषद् ने पुरुष को काममय या इच्छास्वरूप कहा है।[१९]

मन का स्वरूप चेतना है। अत: मन को शरीर में आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। मन में कर्तृत्व और निर्मातृत्व है, अत: वह आत्मरूप है। प्राणमय शरीर से मनोमय शरीर सूक्ष्म है, अत: मनोमय शरीर को सूक्ष्म आत्मा बताया गया है।[२१]

इस समस्त सृष्टि रूप यज्ञ में मन ही ब्रह्मा है। वही इस सृष्टि चक्र का निर्देशक है।[२२] मन की शक्तियाँ अनन्त है, अत: उसे अनन्त कहा गया है।[२३] परमात्मा की प्राप्ति का साधन मन है, मन ही परमात्मा का साक्षात्कार करता है।[२४]

मन के गुण

अथर्ववेद के एक मन्त्र में सूत्र रूप में मनोविज्ञान के सभी विषयों का उल्लेख है।[२५] इसमें 'मनसे' के द्वारा संवेदन। (Sensation) और प्रेरणा (Motivation) का ग्रहण है 'चेतसे' के द्वारा चेतन। (Consciousness) और चिन्तन (Thinking) अभिप्रेत है। 'धिये' के द्वारा ध्यान या अवधान (Attention) अभिप्रेत है। 'आकूतये' के द्वारा अनुभूति (Feeling) और संवेग (Emotion) का ग्रहण है। 'चित्तये' के द्वारा चित्त के धर्म स्मरण (Remembering) और तद्भाव रूप में विस्मरण (Forgetting) का ग्रहण 'मर्त्ये' के द्वारा बुद्धि (Intelligence) अभिप्रेत है। 'श्रुताय' के द्वारा श्रवण, पठन एवं शिक्षण (Learning) का ग्रहण है। 'चक्षसे' के द्वारा चक्षु-कार्य, दर्शन या प्रत्यक्षीकरण (Perception) अभिप्रेत है।

यजुर्वेद ३४वें अध्याय में 'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु' वाले ६ मन्त्रों में मन के सभी महत्त्वपूर्ण गुणों का उल्लेख है। इसमें मन को अति दूरगामी बताते हुए उसकी तीव्रता का उल्लेख किया गया है। मन न केवल जाग्रत अवस्था में ही इधर-उधर दूर तक जाता

है, अपितु स्वप्न (Dream) अवस्था में भी उसी तरह दूर तक जाता है। इसको ज्योतियों की ज्योति अर्थात् प्रकाश का प्रकाशक कहा गया है। यह प्रकाश है, जो ज्ञान और विज्ञान के सभी तत्त्वों को प्रकाशित करता है। यह चेतना (Consciousness) का आधार है।[२६]

इस मन को मानव-हृदय में रहनेवाली अमर ज्योति और अपूर्व यक्ष अर्थात् आदरणीय तत्त्व माना गया है।[२७] मन आत्मा का प्रतिनिधि है, अत: आत्म तत्त्व के तुल्य वह अमर है और प्रकाशरूप है। मन की सत्ता से सब काम होते हैं, अत: उसे अनुपम यक्ष कहा गया है। मन हो प्रेरणा (Motivation) का स्रोत है। इसकी प्रेरणा से सारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के कार्य होते हैं।[२८]

एक मन्त्र में मन के तीन महत्त्वपूर्ण गुणों का उल्लेख हुआ है। ये हैं- प्रज्ञान (Cognitions) चेतस् (Recollection) और धृति (Retention)। साथ ही यह भी कहा गया है कि यह एक ज्योति है। इसके बिना संसार का कोई काम नहीं होता है।[२९]

मन वर्तमान, भूत, और भविष्य तीनों कालों में व्याप्त है। तीनों काल मन की सीमा में आते हैं। मन के द्वारा तीनों कालों का दर्शन होता है। कोई ऐसा काल नहीं है, जिसके विषय में मन चिन्तन और मनन न कर सकता हो।[३०] मन में ही संसार का सारा ज्ञान और बुद्धि (Intelligence) निहित है। इसमें ही चित्त अर्थात् प्रज्ञा शक्ति (Cognitions Faculty) का समावेश है।[३१]

मन एक योग्य सारथि है। यह इन्द्रिय रूपी घोड़ों को ठीक ढंग से नियन्त्रित करता है। इसका निवास स्थान हृदय है। इसकी गति अद्वितीय है और इसमें असाधारण कार्यक्षमता है।[३२]

अनेक मन्त्रों में मन की तीव्र गति का उल्लेख है। मन को वायु के तुल्य तीव्रतम गतिवाला बताया गया है।[३३] मन की गति न केवल पृथ्वी तक ही है, अपितु यह अन्तरिक्ष और द्युलोक तक जाता है।[३४] यह संसार भर में घूमता है कभी भी शान्ति से नहीं बैठता है।[३५] मन चंचल है, अत: विशिष्ट कार्य के लिए उसको रोककर नियन्त्रित करना आवश्यक है।[३६] गीता में मन के निग्रह के लिए अभ्यास और वैराग्य को साधन बताया गया है।

अभ्यासेन त कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।

(गीता ६.३५)

मन के कतिपय अन्य गुणों का भी उल्लेख मिलता है। संसार में व्याप्त शाश्वत नियमों को ऋत कहते हैं। इनकी विभिन्न शाखाएं हैं, इनको ऋत के तन्तु या सूत्र कहा जाता है। इन सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञान मन के द्वारा होता है।[३७] मस्तिष्क में विद्यमान स्नायु-तन्तुओं को भी ऋत के तन्तु कहा जाता है। यजुर्वेद का कथन है कि ये ऋत तन्तु या ज्ञान-तन्तु चारों और फैले हुए हैं। ऋषि या सूक्ष्मदर्शी ही इन तन्तुओं को देख पाते हैं। जो इनका साक्षात्कार कर लेता है, वह तत्त्वदर्शी हो जाता है। मस्तिष्क में विद्यमान ये तन्तु या सूत्र ज्ञान के साधन है, अत: इन्हें ज्ञान तन्तु भी कहा जाता है।

ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य,
तदपश्यत् तदभवत् तदासीत्।।

यजु. ३२.१२

मन त्रिकालदर्शी है। वर्तमान, भूत और भविष्य सर्वत्र इसकी गति है।[३८] मन ही वाक्तत्त्व में संसार का सारा ज्ञान निहित है, अत: मन ज्ञान का धारक और प्रेरक है।[३९] मन को हृदय का निर्देशक कहा गया है, अत: मन हृदय को आदेश करता है।[४०]

मन का कार्य चिन्तन और संकल्प- विकल्प (Tnінking) है। ऊहापोह, तर्क-वितर्क, गुण-दोष का विचार और विविध कल्पनाएं (Imagination) मन का विषय है। अत: कहा गया है कि मन से संकल्प करता है।[४१] यजुर्वेद में भी मन के गुण काम (Desire) और आकूति (Intention, will) बताए गए हैं।[४२]

ऋग्वेद में मन के दो गुणों का उल्लेख है। मन, ज्ञान और कर्म का साधन है। अत: उसे दक्ष अर्थात् ज्ञानयुक्त

और ऋतु अर्थात् क्रियाशील कहा गया है।[४३] मन ज्ञेय वस्तुओं को ग्रहण करता है, अतः ज्ञान का साधन है। वह उस ज्ञान के आधार पर तदनुकूल प्रेरणा देता है और कार्य करता है। अतः वह प्रेरणा (Motivations) का स्रोत है। एक मन्त्र में बुद्धि (Intelligence) का कार्य बताया गया है कि वह मन को चेतना देती है। मन को प्रेरणा देना, उसे कार्यों में नियुक्त करना तथा ध्यान और एकाग्रता की क्षमता प्रदान करना बुद्धि का कार्य है।[४४]

अथर्ववेद में एक मंत्र में प्रत्यक्षीकरण (Perception) की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। संवेदनाओं (Sensations) को ५ ज्ञानेन्द्रियाँ ग्रहण करती हैं और मन के द्वारा इनका प्रत्यक्षीकरण होता है। अतः ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और मन में ६ मिलकर प्रत्यक्षीकरण का कार्य पूरा करते हैं।[४५]

मन की विशेषताएं

मन की अनन्त विशेषताएं हैं। संसार का ऐसा कोई सुख-दुःख, हानि-लाभ, ज्ञान-विज्ञान, उद्योग, संघर्ष, द्वन्द्व, चिन्तन, कल्पना, अनुभूति और अभीष्ट लाभ नहीं है, जो मन के कार्यक्षेत्र में न आता हो। मन को सहस्र किरण या असंख्य शक्ति कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं है। मन द्यावा-पृथिवी, लोक-परलोक, वर्तमान भूत और भविष्य सभी को अपनी परिधि में रखता है। अतः वेदों में इसकी अनन्त शक्तियों का उल्लेख है। अथर्व वेद का कथन है कि मन वशीकरण का साधन है। मन दूसरे के मन को आकृष्ट करता है, उसे वश में कर लेता है और इच्छानुसार उसे यथा स्थान प्रवृत्त करता है।[४६] मेस्मरिज्म और हिप्नोटिज्म (Mesmerism & Hypnotism) मन के द्वारा वशीकरण के सफल प्रयोग हैं। साधना और तप के द्वारा मन की चुम्बकीय शक्ति को विकसित किया जाता है।

शुद्ध एवं पवित्र मन की विशेषता बताई गई है कि इसके द्वारा तेजस्विता, समृद्धि और शारीरिक नीरोगता आदि प्राप्त की जाती है।[४७] शारीरिक नीरोगता का साधन मानस-चिकित्सा है। मन की शुद्धि शरीर के मल और विक्षेपों को दूर करती है।

मन संजीवनी शक्ति है। यह निर्जीव को सजीव और अक्षम को सक्षम बना देती है। इसमें संजीवनी शक्ति है। यह चेतनता प्रदान करता है और कर्म में प्रवृत्ति कराता है। इस प्रकार मन चेतना और प्रेरणा का मूल है।[४८] मन की शक्तियों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि मनोबल से मृत्यु को वश में किया जा सकता है। मरणासन्न को मृत्यु से बचाया जा सकता है। जिस प्रकार मोटी रस्सी से जूए को कसा जाता है, उसी प्रकार मन के द्वारा मृत्यु को भी कसकर वश में लाया जा सकता है।[४९]

मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और तपस्या को मुक्ति का साधन माना गया है।[५०] मन यदि शुद्ध है तो जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है। यदि वह अशुद्ध है तो मनुष्य सदा बन्धन से ग्रस्त रहता है। अतएव कहा गया है कि मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

शाट्यायनीय उप. १)

विचारों की शुद्धता का फल बताया गया है कि इससे सारे मनोरथ सफल होते हैं। साथ ही यह भी बताया गया है कि विचारों की शुद्धि का एक मात्र साधन है- पापों से निवृत्ति, बुराइयों से बचना या कुकर्मों को छोड़ना[५१] मन की पवित्रता से पापों पर विजय प्राप्त की जाती है। मन की पवित्रता सभी प्रकार के युद्धों में विजय प्राप्ति का अमोघ साधन है। पापों को वृत्र कहा गया है। शुभ विचारों से वृत्र का वध किया जाता है।[५२]

जैसा मनुष्य का हृदय होता है, उसी प्रकार उसकी बुद्धि होती है। विचारों और भावनाओं की शुद्धि बुद्धि के परिष्कार का साधन है। अतः कहा गया है कि शुद्धि हृदय से बुद्धि को परिष्कृत करता हूँ।[५३०]

अनेक मन्त्रों में मनोबल या इच्छा शक्ति (Will-

Power) का महत्त्व वर्णन किया गया है। मनोबल वह शक्ति है, जिसे कोई दबा नहीं सकता है। यह अधर्षणीय है। मनोबल, पहाड़ से भी अधिक शक्तिशाली है। दृढ़ निश्चय को पहाड़ भी नहीं रोक सकते हैं।[५४] मनोबल का यह महत्त्व है कि मनुष्य जीवन में कभी हारना नहीं जानता। सदा विजय-लाभ करता है। वह मृत्य से भी हार नहीं मानता। मृत्यु को वश में रखता है।[५५]

मनोबल वह शक्ति है, जिससे विश्व विजय किया जाता है। मंत्र का कथन है कि मनोबल से द्युलोक और पृथ्वी को जीतता हूँ।[५६] मनोबल से युक्त व्यक्ति को चारों दिशाएं प्रणाम करती है। सारी पृथ्वी उसके लिए सुख समृद्धि देती है।[५७] मनोबल को काम या कामना शब्द से सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि वह अपनी सामर्थ्य से प्रतिष्ठित है। उसके लिए किसी दूसरे सहायक की आवश्यकता नहीं है। वह युद्धों में विजयी बनाता है, ओज देता है और तेजोमय है।[५८]

मनोबलका उपयोग जनहित या जनकल्याण के लिए भी होता है। जनहित के लिए मंत्र में नाराशंस शब्द का प्रयोग है। जनहितकारी मन का आह्वान किया गया है।[५९] मनोबल एवं तीव्र संकल्प का फल बताया गया है कि मनुष्य जो कुछ चाहता है, वह उसे प्राप्त हो जाता है। उसके मनोरथ सिद्ध होते हैं।[६०] मन अभीष्ट सिद्धि में रथ का काम करता है और प्रार्थित वस्तु लाकर उपस्थित करता है, अत: उसे रथ की उपमा दी गई है।[६१]

मनोबल से असम्भव कार्यों को भी सम्भव बनाया जा सकता है। मनोबल शक्ति का स्रोत है।[६२] मनोबल मनुष्य को अजेय बना देता है। दो चार नहीं, सैकड़ों शत्रु उसे परास्त नहीं कर सकते हैं। वह शत्रुओं को खलिहान में धान की फली की तरह रोंद देता है।[६३] मनोबल से पापी और आक्रामक को निष्प्रभाव बना दिया जाता है।[६४]

इच्छा शक्ति के विविध उपयोग

वेदों में इच्छाशक्ति (will power) के लिए आकूति और काम शब्द मिलते हैं। इच्छाशक्ति का अनेक प्रकार से महत्त्व बताया गया है । उसको अनेक रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

इच्छा शक्ति सौभाग्य की देवी है। यह मन में रहती है। यह विचार और चिन्तन की जननी है। इसको आगे रखकर सभी महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं।[६५] यह इच्छा शक्ति ऐश्वर्य का स्रोत है। यही मनुष्यों को सफलता दिलाकर समृद्ध करती हैं।[६६] इच्छा शक्ति को मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अध्यक्ष या संचालक बताया गया है। यही मानव को प्रेरणा देती है; शत्रुओं को नष्ट करती है और सभी को सहयोगी बनाती है। जहाँ प्रबल इच्छा शक्ति होती है, वहाँ सभी सहायक होने लगते हैं।[६७] इच्छा शक्ति को अभेद्य कवच गया है। इसका संरक्षण सर्वोत्कृष्ट है। यह तीन प्रकार से रक्षा करती है। अधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार की विपत्तियों से यह मानव की रक्षा करती है। इसको 'ब्रह्मवर्म' अर्थात् ज्ञान-कवच या आत्मबलरूपी कवच कहा गया है। इसके द्वारा सभी विपत्तियों, कष्टों और शत्रुओं को जीता जाता है।[६८]

इच्छा शक्ति के वश में सभी देवगण है। सभी देवों और देवताओं की उत्पत्ति इच्छाशक्ति से हुई है। यह उनका मार्गदर्शन करती है। शरीर के अन्दर विद्यमान इन्द्रियरूपी देवता और बाह्य जगत् में विद्यमान पृथिवी आदि देवता सब इच्छा शक्ति के नियन्त्रण में है।[६९]

यह कामनारूपी इच्छा शक्ति स्थावर जंगम और समुद्र आदि से भी महान् है। महत्ता में इसके समान कोई नहीं है।[७०] जो कार्य इच्छा शक्ति कर सकती है; वह कोई नहीं कर सकता, अत: यह सबसे महान् है। इस इच्छा शक्ति का आदि और अन्त नहीं है। इसे अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, वायु आदि कोई नहीं पा सकता है। अत: यह सबसे बढ़कर है।[७१] यही मानवमात्र की कामनाएं पूर्ण करती है और अभीष्ट की साधक है।[७२]

इच्छा शक्ति से ही जीवन में श्रेष्ठता आती है।

इससे ही देवता श्रेष्ठ हुए। अतएव देवोंको 'काम ज्येष्ठाः' कहा गया गया है।[७३] इच्छा शक्ति को कामधेनु कहा गया है। यह सभी कामनाओं को पूर्ण करती है, अतः कामधेनु है। इच्छा-शक्ति से विचार उद्‌बुद्ध होते हैं। विचारों की अभिव्यक्ति वाणी से होती है। अतः विराट् वाक्तत्त्व को काम की पुत्री बताया गया है।[७४]

इच्छाशक्ति और उत्साह परस्पर सम्बद्ध है। अतः इनका एक मन्त्र में पति-पत्नी के रूप में वर्णन किया गया है। संकल्प विचार की पुत्री इच्छा है और उसका मन्यु (उत्साह) के साथ विवाह हुआ। संकल्प या विचारों से इच्छाशक्ति जन्म लेती है और वह उत्साह के साथ कार्य में प्रवृत्त होती है।[७५]

विचारों का प्रभाव

विचार (Thoughts) मानव को सदा प्रभावित करते रहते हैं। जीवन का निर्माण विचारों के अनुसार होता है। शुभ विचार उन्नति, विकास प्रगति और दीर्घायु के साधन हैं तथा अशुभ विचार रोग, शोक, दैन्य और अल्पायु के कारण है।[७६] शुभ विचार सदा समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये अधृष्य, अप्रतिहत और उन्नतिकारक हैं। शुभ विचार देव-कृपा का फल है, अतः शुभ विचारों में देवों का निवास है। इसलिए मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि शुभ विचार सभी ओर से आवें।[७७] शुभ विचार पाप भावना नष्ट करते है। जीवन में विजय दिलाते हैं और वृत्ररूपी पाप को नष्ट करके आत्मशक्तियों को विजयी बनाते हैं।[७८]

विचारशक्ति में ऊर्जा है, गति है, शक्ति है और प्रभावकता है। विचार शक्ति का उद्‌बोधन, सम्प्रेषण और संक्रमण सभी कुछ हो सकता है। इसमें अजेयता है, आकर्षण शक्ति है और दुर्गुणों के निरोध की क्षमता है। इसके आधार पर ही जीवन में समरसता और विषमता आती है। अनेक मन्त्रों में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

विचार शक्ति का सम्प्रेषण होता है। प्रेम आदि के विचार अपने प्रिय या प्रिया तक पहुँचाये जाते हैं।[७९] भक्त की कामनाओं को अभीष्ट देव सुनते हैं और पूरा करते हैं।[८०] विचारों का संक्रमण होता है । अपने हृदय के विचार दूसरे के हृदय में सङ्क्रमित किये जाते हैं।[८१] विचारों में आकर्षण शक्ति है। दूसरे के इधर-उधर गए मन को लौटाकर लाया जा सकता है।[८२] विचारों की पवित्रता मनुष्य को अजेय बना देती है । दुर्जनों आदि के कटु प्रहार उस पर निष्प्रभाव हो जाते हैं।[८३]

विचार शुद्धि से काम आदि भावनाओं पर विजय प्राप्त की जाती है।[८४] विचार शुद्धि जीवन में समरसता लाती है। इससे शुभ-अशुभ सभी को समभाव से ग्रहण किया जाता है।[८५] विचार शुद्धि से पाप-प्रवृत्ति का नाश होता है, अतः परमात्मा का क्रोधरूपी बाण उस पर कभी नहीं पड़ता[८६] देवता पापी और पुण्यात्मा को जानते हैं। जहाँ शुभ विचार है, वहाँ देवों का निवास है।[८७] विचारों की शुद्धि से ही आत्माका साक्षात्कार किया जाता है।[८८] जब तक दुविचारों को नष्ट नहीं किया जाता, तब तक सुख का मार्ग प्रशस्त नहीं होता।[८९] जिस प्रकार शुभ विचारों का संक्रमण और सम्प्रेषण होता है। उसी प्रकार दुविचारों का भी सम्प्रेषण और संक्रमण होता है। अभिचार के कृत्यों में दुर्विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है।[९०]

संकल्पशक्ति का महत्त्व

वेदों में संकल्पशक्ति का वर्णन काम शब्द के द्वारा हुआ है। संसार में सबसे पहले संकल्पशक्ति का आविर्भाव हुआ उससे ही सारी सृष्टि बनी।[९१] संकल्पशक्ति सबसे महान् है। यह द्यावापृथिवी से भी उत्कृष्ट है।[९२] संकल्पशक्ति मन का सार भाग है; अतः इसे मन का रेतस् या वीर्य कहा गया है।[९३] संकल्पशक्ति आग्नेय तत्त्व है, अतः इसे अग्नि कहा गया है।[९४] सभी प्रकार के यज्ञों से संकल्प शुद्धि को अधिक प्रभावशाली बताया गया है।[९५] संकल्पशुद्धि से कुस्वप्न यादि दोषों का निराकरण किया जाता है।[९६]

वेदों में मनोबल या मनः शक्ति को क्षीण करने

वाले कुछ तत्त्वों का उल्लेख है। इनमें मुख्य हैं- पाप भावना, ईर्ष्या, और काम-भावना। इनके निरोध से मनोबल पुष्ट होता है।[१७]

वेदोद्धारिणी, जुलाई-दिसम्बर, १९८७ से साभार

सन्दर्भ-

१. मनो ब्रह्म। गोपथ, १.२.११

२. मनो ब्रह्मा। गोपथ १.२.११

३. मनो वै प्रजापतिः। तैत्ति. ३.७.१.२

४. मन एव सर्वम्। गोपथ, १.५.१५

५. अनन्त वै मनः शत. १४.६.११, मनो वा अपरिमितम्। कौशी. २६.३

६. मनो देव। गोपथ. १.२.११

७. मन एवाग्निः। शत. १०.१.२३

८. मना वै समुद्रः। शत. ७. ५.२.५२

९. तस्य (मनसः) एपा कुल्य यद् वाक्। जैमिनीय उप. ब्रा. १.५८.३

१०. अपूर्वा (प्रजापतेस्तन्ः) तन्मनः। ऐत. ५.२५

११. यद् हि मनसोऽभियच्छति तद् वाचा वदति। तांड्य ब्रा. ११.१.३

१२. मनसि हि अयमात्मा प्रतिष्ठितः। शत. ६.७.१.२१

१३. मना वै प्राणानाम् अधिपतिः। शत. १४.३.२.३

१४. मनसा ह्येव पश्यति, मनसा शृणोति शत. १४.४.३.८

१५. कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा धृतिरधृतिः ह्रीः धीः भीः इत्येतत् सर्व मन एव। शत. १४.४.३.९

१६. मनो वै सम्राट् परमं ब्रह्म। वृहदा. उप. ४.१.६

१७. मनो ज्योतिः। बृहदा. ३.६.१०

१८. अयं पुरुषो मनोमयः। तैत्तिरीय १.६.१, बृहदा. ५.६.१

१९. अयं काममयः पुरुषः। बृहदा. १.४.११

२०. मन एवास्य आत्मा। बृहदा. १.४.१७

२१. अन्योऽन्तर आत्मा मनोमयः। तैति. २.३

२२. मनो वै यज्ञस्य ब्रह्म। बृहदा. ३.१.६

२३. अनन्त वै मनः। बृहदा. ३.१

२४. मनसैवेदमाप्तव्यम्। कठ. २.१.११

२५. मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये। मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम्।। अथर्व-६.४.१.१

२६. यजु. ३४.१

२७. यजु. ३४.२,३

२८. यजु. ३४.२

२९. यजु. ३४.३

३०. यजु. ३४.४

३१. यजु. ३४.५

३२. यजु. ३४.६

३३. यजु. ९.७

३४. ऋग. १०-५८.२

३५. ऋग. १.-५८.१०

३६. ऋ. ७.२५.१, तै. सं. १.७.१३

३७. अथर्व १३.३.१९

३८. ऋग. १०.५८-१२

३९. ऋग. १०.१७७.२

४०. ऋग. ८.१००.५

४१. अथर्व. १२.४.३१

४२. यजु. ३९.४

४३. ऋग. १०.२५.१

४४. ऋग ८.९५.५

४५. अथर्व. १९.९.५

४६. अथर्व ३.८.६, ६.९४.२

४७. यजु. २.२४; ८.१४; अथर्व. ६.५.३.३

४८. यजु. ३.५४

४९. ऋग. १०.६०.८, ऋग. १०.६.१०
५०. अथर्व. ६.१२२.४
५१. ऋग. १०.१२८.४; अथर्व ५.३.४
५२. ऋग. ८.१९.२०, यजु. १५.३९.४०, साम. १५६०
५३. ऋग. १०.११९.५
५४. ऋग. १०.२७.५
५५. ऋग. १०.४८.५
५६. ऋग. १०.११९.८
५७. अथर्व ९.२.११
५८. अथर्व. १९.२.२
५९. यजु. ३.५३; ऋग. १०.५७.३
६०. ऋग. १०.५३.१
६१. अथर्व १४.१.१०
६२. ऋग. १०.११९.९
६३. ऋग. १०.४८.७
६४. अथर्व. ५.६.१०
६५. अथर्व. १९.४.२
६६. अथर्व. १९.४.३
६७. अथर्व. ९.२.७
६८. अथर्व. ९.२.१६
६९. अथर्व. १९.४.४
७०. अथर्व. १.२.२३
७१. अथर्व. ९.२.२४
७२. अथर्व. १९.५.२.५
७३. अथर्व. ९.२.८
७४. अथर्व. ९.२.५
७५. अथर्व. ११.८.१
७६. यजु. २५.२१; ऋग. १.८९.८; साम. १८७४
७७. ऋग. १.८९.१; यजु. २५.१४
७८. यजु. १५.३९
७९. अथर्व. ६.१३१.२
८०. अथर्व. १९-५२.३
८१. अथर्व. १९.५२.४
८२. अथर्व. ७.१२.४
८३. ऋग. ७.१०४.८, अथर्व ८.४.८
८४. अथर्व. ६.१३२.१
८५. ७.४३.१
८६. अथर्व. ७.५२.२
८७. ऋग. ८.१८.१५
८८. ऋग. १०.१७७.१
८९. ऋग. ९.२.१९
९०. अथर्व. १९.४५.१
९१. अथर्व. १९.४५.१
९२. अथर्व. ९.२.२०
९३. अथर्व. १९.५२.१
९४. यजु. ११.६६
९५. अथर्व. ७.५.४
९६. अथर्व. ९.२२
९७. अथर्व. ६.४५.१; अथर्व १६.१ (१).३ अथर्व. ६.१८.३; ऋग. ७.८६.६

गुरुकुल प्रारम्भ

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की द्विजन्मशताब्दी के शुभ अवसर पर परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आश्रम ग्राम जमानी इटारसी मध्य प्रदेश में परोपकारिणी सभा द्वारा महर्षि दयानन्द गुरुकुल का शुभारम्भ दिनांक ३० अप्रैल २०२३ दिन रविवार को किया जा रहा है। गुरुकुल में आवास, वस्त्र, भोजन आदि की संपूर्ण व्यवस्था निशुल्क रहेगी। गुरुकुल में न्यूनतम पांचवी कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को ही प्रवेश मिलेगा। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-आचार्य सत्यप्रिय ७५०९७०६८२८५

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण

चाहे सोने के फ्रेम में जड़ दो, आइना झूठ बोलता ही नहीं!

श्री मुनि सत्यजित्

सच व झूठ की चर्चा-विचार प्रत्येक मनुष्य में रहता है। जीवन के बहुतेरे आयाम हैं, बहुविध विभिन्न विषय हैं, उन सब में कोई मनुष्य ठीक से सच व झूठ का विचार कर पाये, यह आवश्यक नहीं। अपनी सीमित क्षमता व समय में सब का पूर्ण विचार कर पाना प्राय: सम्भव नहीं हो पाता है। पुनरपि सच व झूठ के विचार से रहित कोई नहीं होता। जितना हो सके उतना अधिक सच व झूठ का विचार हम करते ही हैं। न केवल विचार करते हैं, बल्कि निर्णय का भी प्रयास करते हैं। निर्णय हो, यह हमारी अभिलाषा है, आन्तरिक तीव्र इच्छा है। निर्णय में असफल होने पर भले ही हम उपेक्षा भाव में चले जाते हों, किन्तु इच्छा तो निर्णय की अवश्य रहती है। सच व झूठ, सत्य व असत्य, सही व गलत, उचित व अनुचित, ज्ञान व अज्ञान, विवेक व अविवेक, समझ व नासमझ में से हम कभी इधर तो कभी उधर कितना भी झूलते रहते हों, कब तक भी झूलते रहें, किन्तु चाह तो सच, सत्य, सही, उचित, ज्ञान, विवेक समझ की ही रहती है।

ईश्वर व मुक्ति की चाह सब में हो, यह आवश्यक नहीं। अपने को धार्मिक व नैतिक बनाने या बनने की इच्छा सब में हो, यह आवश्यक नहीं। किन्तु सत्य वह है जिसे सब जानना चाहते हैं, झूठ को कोई नहीं चाहता। सच को यथार्थ में चाहते हैं। सच में थोड़ी भी ऊँच-नीच नहीं चाहते। यथार्थ से थोड़ी भी ऊँच-नीच होते ही वह सच नहीं रहता, झूठ बन जाता है। झूठ तो यथार्थ को कुछ न कुछ कम-अधिक करके ही बनता है, उसकी कोई सीमा नहीं, कितना भी कम या अधिक किया जा सकता है। मनुष्य यह सब भी करता रहता है, किन्तु चाह तो सत्य की ही बनी रहती है।

सत्य की चाह वाले हम सत्य से बचते भी देखे जाते हैं। सत्य की चाह निर्विवाद है, किन्तु सत्य क्या है इसमें अनन्त मतभिन्नतायें हैं। सत्य यदि कड़वा लगे तो हम उससे बचना चाहते हैं, ऐसे सत्य को रोकना चाहते हैं, छुपाना चाहते हैं। सत्य की चाह फिर भी समाप्त नहीं होती। सत्य क्या हैं? सत्य का ज्ञान कैसे हो? सत्य जानने के उपाय क्या हैं? हमारे खोज-प्रयत्न चलते रहते हैं। इसी प्रवाह में कोई कहीं जा टिकता है, कोई कहीं। यही सत्य लगने लगता है कि पूर्ण सत्य को जाना नहीं जा सकता, जो जैसा सोचे उसके लिए वही सत्य है। क्या यह सत्य है? क्या सत्य के प्रयास यहीं रुक जाने योग्य हैं?

सच की तलाश में जब हम अपने को असफल-असमर्थ पाते हैं, तब साधनों की आवश्यकता प्रतीत होती है, सहायता की आवश्यकता प्रतीत होती है। उन्हें ढूंढ़ते हैं, पर सन्देह उन पर भी कर लेते हैं, शंका-संशय बने रहते हैं। चेतन मनुष्य पर पूरा विश्वास सम्भव नहीं हो पाता, परमात्मा को आश्रय सब बना नहीं पाते। साधनों के प्रयास में जड़ पदार्थ भी दिखते हैं। स्वयं को स्वयं से छुपाने में कुशल मनुष्य अधिक देर तक आन्तरिक कसक-पीड़ा से मुक्त नहीं हो पाता। स्वयं नहीं तो अन्य, चेतना नहीं तो जड़। साधनों की खोज में दर्पण दिखाई देता है, कभी झूठ न बोलने के गुण से युक्त दर्पण। सच्चाई की खोज में आशा की किरण! हाँ, पर कितनी? कितनी सीमित, कितनी देर तक! दर्पण निरपेक्ष है, जो जैसा है उसे वैसा दिखा देता है। न कम करके दिखाता है, न बढ़ा करके। अपना चेहरा दर्पण में देखते रहने को उत्सुक मनुष्य भी कम नहीं, आत्ममुग्ध देर तक अपने को निहारने वाले भी कम नहीं, दर्पण से मुख छिपाने वाले भी कम

नहीं। सच की चाह फिर भी बनी हुई है।

दर्पण को सोने के फ्रेम में रखो या लकड़ी के, क्या कमाल की तटस्थता-समस्थिति है। यथार्थ बताने वाला, सच बोलने वाला दर्पण! दर्पण के सामने जो गया, वह तो सत्य का ही भक्त है, उसे सत्य के सिवा कुछ नहीं चाहिये। क्या महिमा है। दर्पण-दर्पण है, अपना कुछ मिलाता नहीं है, बस वही उगल देता है, जो है, जो सत्य है। सत्य को चाहने वाले हम मनुष्य, अपने असत्य को सत्य दिखाने वाले हम मनुष्य, दूसरे के सत्य को असत्य दिखाने वाले हम मनुष्य। संसार को सत्य-असत्य के दो खाँचों में रखने को उत्सुक-प्रयत्नशील हम मनुष्य। सत्य को जानने व जनाने को उत्सुक हम मनुष्य। दर्पण से क्या उगलवाना है? दर्पण से उगले को अपने अनुकूल कैसे बनाना है? दर्पण से उगले किस अंश को पकड़ना-उभारना है, किस अंश को छोड़ना-दबाना है? इसमें तो चेतन का ही अधिकार होना चाहिए, जड़ का क्यों?

दर्पण तो दर्पण है! सच बोलता है। क्या मनुष्य उससे सच ही ग्रहण करता है? मनुष्य तो दर्पण भी बनाता है, इच्छित परिणाम लाने वाले दर्पण भी बनते हैं। पतला-मोटा, लम्बा-ठिगना दिखाने वाले, झूठ बोलने वाले दर्पण भी बनते हैं। सच बोलने वाले कैमरे भी इसी विपत्ति में ग्रस्त होकर, सच पाने के उपायों में संदिग्ध कर दिए गए हैं। समस्या बाहर नहीं अन्दर है। जड़ में नहीं चेतन में है। यूं तो दर्पण ही क्या, हर वस्तु अपना यथार्थ स्वरूप ही बता रही है, पर सच का झूठ तो अन्दर ही बनता है। जड़ प्रकृति, जड़ कार्य जगत् अपना या दूसरों का सच ही बताने को निर्मित हैं। वहाँ कहीं असत्य नहीं है। सत्य को असत्य, असत्य को सत्य करने की भिन्नता तो चेतन के कारण है।

जानने-जनाने की प्रक्रिया सबसे महत्त्वपूर्ण है। ईश्वर-वेद-दर्शन को स्वीकारने वाले सत्य ही जानेंगे, यह आवश्यक नहीं। दर्पण के सामने जाने वाला सत्य का ही पुजारी होता तो साज-सज्जा करके दर्पण के सामने नहीं जाता। न ही दर्पण के उगले सच को सच मान कर फिर अपने को सुन्दर मानने की भूल करता। जो सत्य के लिए उद्यत है, वास्तव में उद्यत है, उसे ही दर्पण सत्य दिखा सकता है। सत्य के लिए उद्यत को ही वेद-आर्ष ग्रन्थ सत्य दिखा-जना सकते हैं। दर्पण-दर्पण रहे, दर्पण को दर्पण रख पायें, यह प्रयत्न साध्य है। वेद-आर्ष ग्रन्थ प्रमाण रहें, प्रमाणों को प्रमाण बनाये रख पायें, यह प्रयत्न साध्य है। सबकी सच्चाई सबके साथ है, अपनी सच्चाई के आश्रय ही दर्पण से पूर्ण सत्य ले सकते हैं, वेद-आर्ष ग्रन्थों से यथार्थ जान सकते हैं। मात्र दर्पण की प्रशंसा से सत्य के प्रति आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। मात्र वेद-आर्ष ग्रन्थों की प्रशंसा व निकटता से सत्य के प्रति आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। सत्यमेव जयते, हमारा प्रयास आवश्यक है, आन्तरिक शुद्धता-पवित्रता आवश्यक है, एषणाओं से ऊपर उठकर प्रयत्न करना आवश्यक है। यह जीवन का सत्य है। मधुर या कटु? निर्णय हमें करना है। मधुर लगे या कटु, प्रयत्न तो आवश्यक है। मधुर लगे या कटु, परिणाम तो मधुर ही होना है।

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। **(सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)**

संस्था समाचार

प्रात: काल यज्ञोपरान्त सत्संग के कार्यक्रम में मुनि सत्यजित् जी ने ऋ. ७/५८/५ मन्त्र के माध्यम से बताया कि किन मनुष्यों का हमें सत्कार करना चाहिए और किन का तिरस्कार करना चाहिए। जो पापी लोग हैं वे यदि धार्मिक जनों का अनादर करते हैं। धार्मिक जनों को ऐसी वाणी बोलते हैं कि उनकी वाणी से धार्मिक जनों को कष्ट होता है। ऐसे लोगों का सदा ही अपमान, अनादर करते रहना चाहिए। उनको दूर करना चाहिए। उन्हें दूर बसाना चाहिए। यदि वे बलशाली हैं तो धार्मिक लोग उनसे दूर हो जाएं। जो नम्रता आदि गुण युक्त धार्मिक लोग हैं। उन्हें अपने समीप बसाना चाहिए। पापी जन भी दो प्रकार के होते हैं। एक पापी लोग हैं जो स्वयं पाप करते हैं लेकिन धार्मिक जनों को कष्ट नहीं देते। दूसरे पापी जो स्वयं भी पाप करते हैं और धार्मिकों को भी कष्ट देते हैं। इनमें जो धार्मिकों को कष्ट देते हैं वह अधिक तिरस्कार के योग्य हैं। धार्मिक जन भी दो प्रकार के होते हैं एक धार्मिक जन जो अभिमानी होते हैं। दूसरे धार्मिकों का सत्कार नहीं करते। दूसरे धार्मिक जन जो स्वयं भी धार्मिक होते हैं और अन्य धार्मिकों का सत्कार करते हैं। नम्रता आदि गुण से नियुक्त हैं। ऐसे लोगों के साथ हमें सदा रहना चाहिए। ऐसे लोगों का ही हमें सत्कार करनी चाहिए।

मानव उत्पत्ति के नववर्ष के अवसर पर मुनि जी ने बताया कि यह हमारा नववर्ष सबसे बड़ा त्यौहार है, क्योंकि पेड़, पौधे, पशु, पक्षी बनने के बाद मनुष्य उत्पत्ति की युवावस्था में तिब्बत में हुई। इसी समय मानव संविधान वेद का ज्ञान मिला। आज भी हमारे पास चारों वेद उपलब्ध हैं। अभी सृष्टि का लगभग मध्य का काल चल रहा है। अन्य सभी संवत् चाहे ईसा संवत् हो हिजरी शक आदि यह तो बहुत बाद में बने हैं। साथ ही वेदोपदेश करते हुए बताया कि जो लोग दुष्ट हैं हम उनसे दूर रहे हैं। जो दुष्ट हृदय वाले हैं। उन्हें जो विद्वान् लोग हैं। उनके सानिध्य में रखकर उनके अन्त:करण के पाप को नष्ट करना चाहिए। जब वे ठीक हो जाएं तो अपने साथ रखना चाहिए।

शहीद दिवस के अवसर पर आप ने बताया कि हमें जो देश, राष्ट्र, समाज, मनुष्य, वेदोक्त कर्म को कर रहा है। उनके लिए हम अपना बलिदान करें। प्रतिशोध के लिए,अपने स्वार्थ के लिए, अपने नाम के लिए बलिदान होना उचित नहीं है। अन्याय, अत्याचार को दूर करने और श्रेष्ठ लोगों को सुख देने के लिए बलिदान उचित है। श्रेष्ठ मनुष्य अपने देश में भी हैं तथा दूसरे देश में भी इसी तरह से दुष्ट मनुष्य अपने देश में है। तथा अन्य देशों में भी है हमें सदा श्रेष्ठों का सम्मान सहयोग और दुष्टों का तिरस्कार करते रहना चाहिए। मनुष्य का शरीर मुख्य रूप से श्रेष्ठ कर्मों को करने के लिए मिला है ना कि केवल भोग भोगने के लिए इसलिए बलिदान होने में हमारा लाभ ही है।

आचार्य शक्तिनन्दन ने महाभारत के श्लोक के माध्यम से बताया कि मनुष्य कैसे सुखी रह सकता है। धैर्य से अपने शिश्न और उदर की रक्षा करें। बिना धैर्य के इन पर नियन्त्रण नहीं हो सकता और इन पर नियंत्रण ना होने से अपनी हानि होती है। आंख से अपने हाथ और पैर की रक्षा करें। मन से आंख और कान की रक्षा करें और विद्या से मन और वाणी की रक्षा करें। विद्या के बिना मन और वाणी पर नियंत्रण नहीं हो सकता। स्वार्थ दो प्रकार का होता है। निन्दित और प्रशंसित। हम सभी किन्हीं परिस्थितियों में स्वार्थी होते हैं। अन्य की अपेक्षा मुझे ज्यादा मिठाई आदि स्वादिष्ट वस्तु मिल जाए। एक मां होती है कि वह बच्चों को खिलाकर स्वयं के लिए ना बचे तो भी प्रसन्न रहती है। मेरे कारण दूसरों को पीड़ा ना हो। दूसरों को दु:खी देखकर स्वयं को खुशी मिलती है। यह पैशाचिक आनन्द है। दूसरे जब कोई हमारा मजाक कर रहे हैं तो उससे इतना दु:ख नहीं होता जितना

कि जब आसपास वाले लोग हंसते हैं तब ज्यादा दु:ख होता है।

आपने वाल्मीकि रामायण के आधार पर श्रीराम के गुणों का व्याख्यान किया। आज से लगभग १३ लाख वर्ष पूर्व त्रेता युग में श्रीराम जिनका कि हम आज भी गुणगान करते हैं। श्रीराम का मधुर भाषण करने का स्वभाव है। महान् ओज, तेज, बलशाली हैं। आपके अन्दर इतना बल होने पर भी आप अपने बल पर गर्व नहीं करते हैं। किस समय क्या करना चाहिए यह भी जानते हैं। किसी ने कोई उपकार क्या हो उसे भी याद रखने वाले थे। हर क्षण नए-नए ज्ञान जिनके मन उत्पन्न होता हो। तत्काल निर्णय लेते समय ठीक निर्णय लेते थे। ज्ञान वृद्धों और वयोवृद्धों के साथ वार्तालाप करते थे। अब शस्त्र अभ्यास के बीच का समय जो इन्हें मिलता है। उस समय उनके साथ चर्चा करते थे। आधि-व्याधि के रोगों से रहित थे। उनका हाथ घुटने तक जाता था। मनुष्य के मन की बात को जानने वाले और स्थितप्रज्ञ थे। अपनी सेना का ध्यान रखते हुए युद्ध करते थे सैनिकों को किसी प्रकार को कोई कष्ट ना हो। राम का जो बाण है वह व्यर्थ नहीं जाता था। इसलिए आज बोलते हैं। यह रामबाण औषधि है। श्रीराम जो एक बार बोल देते हैं उसे दोबारा नहीं बोलते थे। दुष्टों के द्वारा दबाए नहीं जा सकते हैं।

ऋषि उद्यान में वैदिक विद्वानों का आगमन होता रहता है इसी क्रम में आचार्य श्री संस्कृतानन्द हरि का आगमन हुआ। आप श्रीमती के साथ आएं हैं। आपने संस्कृत में प्रवचन देते हुए बताया कि मनुष्य जीवन की सफलता वेदों को पढ़ने, याद करने, वेद विहित कर्मों को करने में, सद्‌गुणों को धारण करने में और दुर्गुणों को दूर करने में है। कोई व्यक्ति कला में कुशल हो सकता है। इससे उसके जीवन की सार्थकता नहीं है। कोई व्यक्ति कम योग्य होकर भी अपने दोषों को दूर कर अपने शुभ आचरण से जीवन को सफल कर सकता है।

आचार्य कर्मवीर ने स्वतंत्रता और परतंत्रता के विषय में बताया कि यदि व्यक्ति बुद्धिमान् है, धार्मिक है। वही स्वतंत्रता का लाभ ले पाता है जो कम जानते हैं या अधार्मिक हैं। वे स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं। इसलिए वही देश राष्ट्र ठीक से चल पाता है जहाँ अच्छी तरह से दण्ड का विधान हो। माता-पिता व अध्यापक के अनुशासन में रहकर ही बच्चे का निर्माण होता है आज इसकी कमी है। परिवार में भी पति पत्नी के बीच जो झगड़े बढ़ रहे हैं। उसका कारण भी अनुशासनहीनता है। स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं। सेना में अनुशासन के कारण ही सभी सैनिक ठीक से कार्य कर पाते हैं और देश की सुरक्षा कर सकते हैं। हमें भी अपने जीवन के कल्याण के लिए हम से अधिक गुणवान् व्यक्ति व ईश्वर के अनुशासन में सदा ही रहना चाहिए।

भजन के क्रम में पण्डित भूपेन्द्र जी ने-

न गाया ईश गुण,
माया का गुण गाया तो क्या गाया,
आज बुरे हाल में दुनिया है
सच्चाई त्यज, कपट के फंसी जाल में दुनिया है।

ऋषि उद्यान में विशोका मुनि जी वानप्रस्था जो लगभग ३ महीने रही। किसी कारणवश उन्हें जाना पड़ा। उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए बताया यह आश्रम स्वर्ग के समान है। मैं अपने पुण्य कर्म के कारण देवताओं के बीच में रही। यहाँ के सहयोगियों और अधिकारी लोगों को उन्होंने धन्यवाद किया। उनसे यह कहा गया कि यदि आपको नहीं रखेंगे तो किसे रखेंगे।

अजमेर स्थापना दिवस यज्ञ की आहुतियों के साथ मनाया- 27 मार्च, 2023 को अजमेर का 911वाँ स्थापना दिवस पृथ्वीराज फाउंडेशन की ओर से सोमवार को पुष्कर रोड स्थित ऋषि उद्यान में वैदिक यज्ञ के साथ विचार गोष्ठी का आयोजन कर मनाया गया।

इस अवसर पर सभी ने वेद मंत्रों की आहुति देते हुए अजमेर के गौरव की रक्षा और उत्तरोत्तर विकास की

भावना जताई। वैदिक विद्वान आचार्य कर्मवीर ने कहा कि अजमेर वो शहर है जिसे वीरों की भूमि कहा जाता है, जिसे चौहान वंश के 23वें शासक अजयराज ने बसाया और उन्हीं के वंशज पृथ्वीराज चौहान ने अपनी शौर्य गाथाओं से सुशोभित किया। उन्होंने कहा कि हमें हमारी गौरवमयी संस्कृति को कभी नहीं भूलना चाहिए और अपने बच्चों व आने वाली पीढ़ियों को भी अपने गौरवशाली इतिहास और संस्कृति से रूबरू कराना चाहिए। आचार्य कर्मवीर जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी तीन बार अजमेर नगर आए और यहाँ के मुख्य नगर में अजमेर, पुष्कर, ब्यावर, मसूदा, शाहपुरा आदि में रहे हैं और उनका देहावसान भी इसी अजमेर में हुआ।

पृथ्वीराज फाउंडेशन के श्री अनिल कुमार जैन ने कहा कि अरावली की सुरम्य पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य चौहान शासकों द्वारा बसाया गया अजयमेरु इस देश की राजधानी भी रहा है। इसने कई उतार-चढ़ाव भी देखे हैं, किंतु आज यह स्मार्ट सिटी की डगर पर है। हमें इसके उत्तरोत्तर विकास के लिए निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए और नई पीढ़ी को रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ना चाहिए।

उन्होंने आर्य समाज, स्वामी दयानन्द सरस्वती और अजमेर के विषय पर बोलते हुए कहा कि दयानन्द सरस्वती जी का अजमेर से गहरा नाता रहा है और अनेक उपकार किये हैं। अजमेर में परोपकारिणी सभा व वैदिक यंत्रालय की स्थापना की और अजमेर की भिनाय कोठी में ही अंतिम सांस ली।

अजमेर को आपने आर्य समाज का प्रमुख तीर्थ कहा बना दिया। श्री अनिल जैन ने ऋषि उद्यान के प्रकृतिमय वातावरण और ऋषि मुनियों के बीच बैठ कर यज्ञ और मंत्रोच्चार करने की अनुभूति को अद्‌भुत बताया।

पृथ्वीराज फाउंडेशन के संजय सेठी ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर कुसुम शर्मा, अनीता भार्गव, ऋषि राज सिंह, अर्णव राज, अनन्या और गुरुकुल के समस्त ब्रम्हचारी, वानप्रस्थी और सन्यासी उपस्थित रहे।

- आचार्य ज्ञानचन्द्र

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों से निवेदन

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान अजमेर में आने वाले सज्जनों के निवास-भोजन की व्यवस्था की जाती है। यह व्यवस्था ठीक से चल सके, इसके लिए आप अतिथियों के सहयोग की अपेक्षा है। जो भी अतिथि यहाँ कम या अधिक दिन रुकना चाहें तो आने के कम से कम दो दिन पूर्व परोपकारिणी सभा या ऋषि उद्यान के कार्यालय में सूचना देकर स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लेवें। सूचना में अपना नाम, पता, दूरभाष व साथ में आने वाले व्यक्तियों की संख्या, उनकी अवस्था (आयु), स्त्री या पुरुष सहित बता देवें। शौचालय की सुविधा भारतीय या पाश्चात्त्य अपेक्षित है? आपके यहाँ पहुँचने व प्रस्थान का दिन और समय तथा भोजन ग्रहण करेंगे या नहीं, यह भी स्पष्टता से बता देवें। आधार कार्ड की छाया प्रति साथ लाएं। यह सब लिखकर व्हाट्सएप पर भेज देंगे तो श्रेष्ठ है।

आपकी सूचनाओं के होने पर आपके लिए व्यवस्था समुचित की जा सकेगी। अचानक बिना सूचना के आने पर होने वाली असुविधा व कष्ट से आप बच सकेंगे। साथ ही इससे यहाँ के कार्यकर्त्ताओं को भी अनावश्यक असुविधा से बचाने में सहायता होगी। आशा है आपका समुचित सहयोग मिल सकेगा। **सूचना हेतु सम्पर्क-**

ऋषि उद्यान कार्यालय	- ०१४५-२९४८६९८	**परोपकारिणी सभा कार्यालय**	- ०१४५-२४६०१६४
व्हाट्सएप	- ८८९०३१६९६१	**सम्पर्क का समय**	- ११ से ४ बजे तक

(किसी एक सम्पर्क पर सूचना देना पर्याप्त रहेगा) **निवेदक - मन्त्री**

परोपकारिणी सभा एवं वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ

क्रमांक	नाम पुस्तक		मूल्य
कर्मकाण्डीय			
५४.	वैदिक नित्यकर्मविधि		२५.००
५५.	पञ्चमहायज्ञविधि		२०.००
५६.	विवाह पद्धति		२०.००
५७.	संस्कारविधि सजिल्द		८०.००
५८.	हवनमन्त्राः		५.००
विविध			
५९.	गोकरुणानिधि		१०.००
६०.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश		१०.००
६१.	स्वीकारपत्र		३.००
६२.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	१०.००	
६३.	महर्षि दयानन्द – आत्मकथा	३०.००	
६४.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	४०.००	
पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ			
६५.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)		४.००
६६.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)		१०.००
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण (स्वामी नारायण मतखण्डन)		२.००
६८.	वेदविरुद्धमत खण्डन		१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण		२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी		८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)		६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)		७.००
७३.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद		१०.००
७४.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ		१५०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

७५.	वर्णोच्चारण शिक्षा१५.००	
७६.	संधिविषय	६०.००
७७.	नामिक	७०.००
७८.	कारकीय	३०.००
७९.	सामासिक ४०.००	
८०.	स्त्रैणताद्धित	६०.००
८१.	अव्ययार्थ	१५.००
८२.	आख्यातिक	२५०.००
८३.	सौवर	२०.००
८४.	पारिभाषिक	४०.००
८५.	धातुपाठ ५०.००	
८६.	गणपाठ	३५.००
८७.	उणादिकोष ८०.००	
८८.	निघण्टु	३०.००
८९.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	५०.००
९०.	व्यवहारभानु:	२५.००
९१.	निरुक्त मूल	८०.००
९२.	अष्टाध्यायी मूल	अनुपलब्ध
९३.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९४.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द २५०.००	
९५.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द १३०.००	

डॉ. भवानीलाल भारतीय

९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन पत्र (सजिल्द)	५१.००
९७.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन पत्र (अजिल्द)	३१.००
९८.	परोपकारिणी सभा का इतिहास अनुपलब्ध	
९९.	दयानन्द वचनामृत	५.००
१००.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

(परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित)

योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर

(स्वामी विष्वङ्‌जी परिव्राजक के सान्निध्य में)

संवत् २०८०, आषाढ़ कृष्ण अष्टमी से अमावस्या तक, तदनुसार ११ से १८ जून २०२३

इस योग-साधना शिविर में योग सम्बन्धी विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक शिविरार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
३. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
४. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
५. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
६. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
७. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
८. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।
९. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
   उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२९४८६९८, मो. ९३१४३९४४२१) से सम्पर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार अतिरिक्त भुगतान से की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गम्भीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर

देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क २००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क २००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारम्भ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है, क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर **दूरभाष :** ०१४५-२९४८६९८, मो.नं. ९३१४३९४४२१

– : मार्ग : –

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर

स्थान - ऋषि उद्यान, अजमेर, राजस्थान

आर्य वीर दल शिविर - दिनांक - १४ से २१ मई २०२३ तक

आर्य वीरांगना दल शिविर - दिनांक - १९ से २५ जून २०२३ तक

सभी आर्य वीरों व वीरांगनाओं को नमस्ते। आप सभी को सूचित किया जाता है कि आर्य वीर व आर्य वीरांगना श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित किया जाएगा ।

शिविर की विशेषता - १- शिविर आर्यवीर दल अजमेर एवं परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होगा । इसमें राष्ट्रीय स्तर के शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा।

२- शिविर में सहयोग राशि ५००/- रुपये रहेगी।

३- सभी को गणवेश में रहना अनिवार्य होगा । गणवेश यदि उपलब्ध नहीं है तो शिविर स्थल से क्रय कर सकते हैं।

४- इस शिविर में सैनिक शिक्षा का विशेष प्रशिक्षण होगा।

५- आर्य वीर शिविर स्थल पर १३ मई २०२३ व आर्य वीरांगना शिविर में १८ जून २०२३ को रात्रि तक आना अनिवार्य है।

६- शिविर में भाग लेने वाले आर्य वीर अपनी आने की सूचना **श्री कमलेश पुरोहित** को चलभाष संख्या ९८२८१८०१९७ एवं आर्य वीरांगना की सूचना **श्रीमती सुलक्षणा शर्मा** को चलभाष संख्या ९४१३६९५४८९ पर अवश्य देवें । धन्यवाद ।

विश्वास पारीक-जिला संचालक-९४६००१६५९०

आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल अजमेर

परोपकारिणी सभा, अजमेर

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्य पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करेंः-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

परोपकारी ग्राहकों हेतु आवश्यक सूचना

परोपकारी के अनेक सदस्यों की यह शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने पर डाक व्यय बढ़ जाता है। सदस्यों से निवेदन है कि जो रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं, वह निम्नानुसार डाक व्यय सभा के खाते में अग्रिम रूप से जमा करके कार्यालय को सूचित कर दें। रजिस्टर्ड डाक का व्यय (पत्रिका शुल्क के अतिरिक्त) निम्न प्रकार है-

१. प्रत्येक अंक (वर्ष भर २४ अंक) रजिस्टर्ड डाक से मंगाने पर - डाक व्यय - १०००/-

२. एक मास के दो अंक- एक साथ मंगाने पर वार्षिक - डाक व्यय - ५००/-

३. एक वर्ष के २४ अंक- एक साथ मंगाने पर - डाक व्यय - १००/-

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषिउद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गए हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थाई प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए-

चलभाष : ७०१४४४७०४० पर सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क समय- अपराह्न ३.३० से ४.३०।

शुल्क वृद्धि की सूचना

परोपकारी के पाठकों बडे भारी मन से सूचित करना पड रहा है कि कागज के मूल्य और छपाई के अन्य साधनों के मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि के कारण जनवरी 2023 से सदस्यता शुल्क बढाना पड रहा है। बढी हुई दरें इस प्रकार से हैं -

भारत में

एक वर्ष -	400/-	पांच वर्ष -	1500/-
आजीवन (20 वर्ष) -	6000/-	एक प्रति -	20/-

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। **आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।**

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। राशि जमा करने के पश्चात् दूरभाष द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें। दूरभाष - 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ मार्च २०२३ तक)

१. डॉ. वेदपाल, मेरठ २. श्री त्रिभुवन प्रकाश अग्रवाल, गाजियाबाद ३. कर्नल अनिल सिंघल, नई दिल्ली ४. श्रीमती उर्मिला माहेश्वरी, अजमेर ५. श्री सुरेशचन्द नामा, अजमेर ६. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ७. श्री सत्यनारायण सोनी, अजमेर ८. डॉ. सन्दीप आर्य, हिसार ९. श्री अभिनव, जालन्धर १०. श्री प्रेमसुख जाजड़ा, करनाल ११. श्री सुधीर कुमार साहनी, अजमेर १२. श्री रविकान्त शाह, भुवनेश्वर १३. आर्यसमाज, विसावदार, जूनागढ़ १४. श्री प्रणव आर्य, नई दिल्ली १५. श्री विश्वबन्धु शास्त्री, दिल्ली १६. श्री अभिषेक शर्मा, जोधपुर १७. मुनि विशोका, सरदारशहर १८. आर्यसमाज, नावदा १९. श्री महेन्द्र यादव/ मुनि शान्ति, भागलपुर २०. श्री जे.पी. गुलाटी २१. श्री आदित्य मुनि व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर २२. श्री कार्तिक आर्य, मेरठ २३. श्री शिवांश राठौड़, अजमेर २४. श्री दिव्यांश राठौड़, झालावाड़।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(०१ से १५ मार्च २०२३ तक)

१. श्री दुर्गाप्रसाद, लखनऊ २. संजना शर्मा, अजमेर ३. श्रीमती सरोज मालू व श्री दिनेश मालू, मदनगंज, किशनगढ़ ४. श्री मदनलाल नवाल/श्रीमती सरला नवाल, गुलाबपुरा ५. श्री अनीश, अजमेर ६. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ७. मुनि विशोका, सरदारशहर ८. जे.पी. गुलाटी ९. श्री आदित्य मुनि व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर १०. आर्य राजकिशोर मोदी, भीलवाड़ा ११. श्री संगीत जैन, जबलपुर १२. श्री यशप्रताप सिंह, अजमेर १३. श्रेया सिंह, अजमेर १४. श्रीमती तुलिका साहू, विलासपुर।

अन्य प्रकल्पों हेतु सहयोग राशि

१. रोशनी, दिल्ली २. श्री मनीष माहेश्वरी, मदनगंज-किशनगढ़ ३. श्री महेन्द्र सिंह रावत, अजमेर ४. श्री राकेश गर्ग, मदनगंज-किशनगढ़ ५. श्री प्रणव मुनि वानप्रस्थी, जयपुर ६. श्री मुकेश रावत, सोनीपत ७. डॉ. सर्वेश्वर पालड़िया अजमेर ८. श्री अनिल कुमार आर्य, दिल्ली ९. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर १०. श्री सुरेश कुमार आनन्द, नई दिल्ली ११. मुनि सत्यव्रत, अजमेर १२. श्री सुन्दरलाल वैद्य, अजमेर १३. डॉ. गंगाधर, सिकन्दराबाद।

शोक समाचार

आर्य समाज पीपाड़ नगर, जोधपुर के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री शिवरतन जी की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी का स्वर्गवास दिनांक ०५-०३-२०२३ को हो गया है जिनका अंत्येष्टि संस्कार आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा वैदिक रीति के अनुसार किया गया। दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

yono SBI | SBI Payments

MERCHANT NAME : PROPKARNI SABHA
UPI ID : PROPKARNI@SBI

SCAN & PAY

BHIM
SBI Pay
BHIM UPI

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

पुस्तक-परिचय

सर्वोदय वैदिक नित्य कर्मविधि

संकलनकर्त्ता- आचार्य सर्वमित्र

सौजन्य- सूबेदार करतारसिंह आर्य

आर्य समाज गोहाना, जिला-सोनीपत, हरियाणा।

प्रकाशक- स्वामी आत्मानन्द वैदिक गुरुकुल मलारना चौड़, सवाई माधोपुर, राज.।

मूल्य- स्वाध्याय एवं आचरण,

पृष्ठ संख्या-१९६

हमारे जीवन में आदिकाल से यज्ञ का महत्त्व रहा है। यम नियमों के आधार पर नित्यकर्म यज्ञ पद्धति आवश्यक है। हम स्वकल्याण एवं परकल्याण के लिए इसे स्वीकारें। प्रत्येक मन्त्र का शुद्ध मातृभाषा में उच्चरित कर अपने विचारों, मनोभावों को उच्च बनायें। यज्ञ से नाना प्रकार के रोग, व्याधियाँ, संकटों को दूर करने एवं आत्मकल्याण आवश्यक है यह तभी सम्भव है जब नियमित स्वाध्याय, साधना, ध्यान, यज्ञ को मुख्य कर्म बनाएं और अपने को ढालने की चेष्टा करें। यज्ञ से परम शक्ति एवं सभी उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

प्रत्येक मानव प्रारम्भिक अवस्था में सोचता है यज्ञ प्रारम्भ करुं तो मुझे क्या-क्या करना है। मैं उन मन्त्रों को कहाँ किस प्रकार खोजूँ। मेरा ध्येय कैसा पूरा हो। मैं सरलतम रूप से उसको अपने जीवन का अंग बनाकर कार्य शुरु करुँ। उसी अनुरूप लेखक ने सभी मनोभावना का आदर कर सबके हितार्थ, सरल रूप से अर्थ सहित संकलन कर सर्वहिताय के दृष्टिकोण से सामग्री परोसी है। हम इसका लाभ किस प्रकार लें और मन के भावों को समझाने का प्रयास करें। लेखक ने यज्ञ परिचय पूर्व सज्जा, दैनिक व वृहद् यज्ञ, विशेष पर्व- नव संवत्सरेष्टि, आर्य स्थापना दिवस, श्रावणी उपाक्रम, विजयदशमी, शारदीय नव सस्येष्टि, महर्षि निर्वाण दिवस,जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, भूमिपूजन, प्रार्थना, ध्वजगान, गीत, यज्ञोपवीत, भोजन मन्त्र, शयनकालीन मन्त्र, शयन गीतिका, कुछ भजन व जयघोष एवं आर्यसमाज के नियम सभी का विवेचन उत्तम व सरल रूप में प्रस्तुत किया है। कहीं ढूंढने, पूछने, विचार-विमर्श की आवश्यकता नहीं। ध्येय प्रबल है तो हम इस कार्य को विधि विधान से स्वपाठ कर अति आनन्द से दैनिक दिनचर्या को धार्मिक, मनः शान्ति, उत्तम वातावरण, पर्यावरण, आत्मशुद्धि के साथ आरम्भ करें। अपेक्षा है कि सभी जन इसका स्वाध्याय कर लेखक की भावना व कठोर परिश्रम का आदर कर हम व अन्यों को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करें। लेखक का धन्यवाद व साधुवाद।

देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय का पुनः आरम्भ २६ अगस्त को किया गया है। यह चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें। **- मन्त्री**

आर्य समाज स्थापना दिवस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमित शाह एवं गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत यज्ञ करते हुए

कन्या गुरुकुल की झाँकी का निरीक्षण एवं मुख्य अतिथि को सम्मानित करते श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य (जेबीएम ग्रुप) एवं साथ में हैं गुजरात राज्यपाल आचार्य देवव्रत

आर जे/ए जे/80/2021-2023 तक प्रेषण : १५-१६ अप्रैल २०२३ आर.एन.आई. ३९५९/५९

आर्य समाज के १४८ वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तालकटोरा इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय श्री अमित शाह उद्बोधन देते हुए, सुशोभित मंच एवं उपस्थित आर्यजन।

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट